भोजपुरी

पाँडेय कपिल
१२/१२/५३

वरिस २
अंक ५
अगहन
३३० तु० सं०
दिसंबर १९५
आरा।

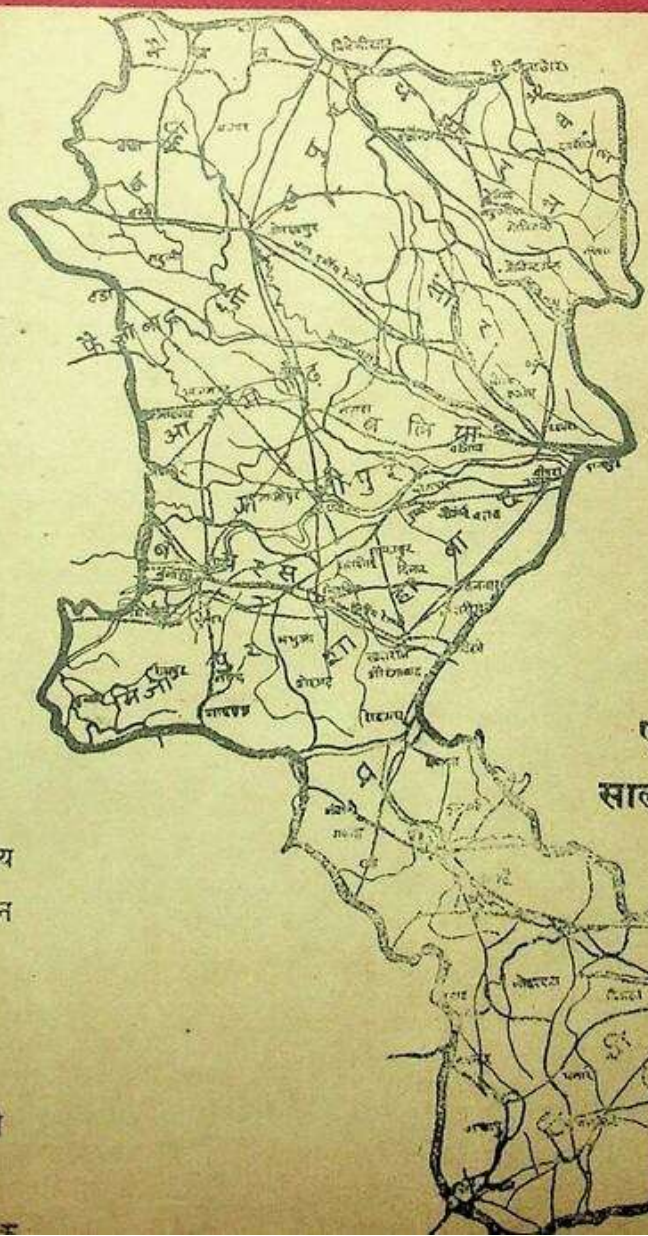

एकर ।)
सालभर के ५)

संपादक-मंडल--
आचार्य श्री शिवपूजन सहाय
महापंडित राहुल सांकृत्यायन
श्री बलदेव उपाध्याय
डा० उदयनारायण तिवारी
डा० विश्वनाथ प्रसाद
डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
श्री त्रिवेणी प्रसाद
रघुवंशनारायण सिंह, संपादक

बिहार सरकार से स्कूल, कालेज आ पुस्तकालयन खातिर मंजूर।

राष्ट्रपति के प्रति

ई देवता हऽ केहू धइले अदिमी के भेस बा,
ई जस देख ब्योम बनिके चमकत दिनेश बा।
ई गान्ही के बचनिया के अलख जगावेला,
ई दीन-हीन लोगवा से कन्हवा मिलावेला,
ई दिन-राति झोपड़ी में मनवा लगावेला,
ई भोरे उठि गान्ही जी के रहिया बहारेला।

ई देस के अमीर बनावे में प्रवीन बा,
ई घरे-घरे कल्प-वृक्ष रोपे में तलीन बा,
ई आपस के नोचा-चोथी देखि के मलीन बा,
ई होइ के रजेन्द्र घरे आइलऽ सुरेश बा
ई देवता ह केहु धइले अदिमीं के भेस बा

फैन्सी कपड़े की एकमात्र विश्वासी दूकान

* नागरमल सत्यनरायन *

आरा।

उचित कीमत में अपने पसन्द लायक

नए डिजायन के सुन्दर टिकाउ कपड़ा खरीदिये,

परीक्षा प्रार्थनीय।

www.bhojpurisahityangan.com

बरिस २, खंड ३ | आरा, अगहन तु० सं० ३३० संवत २०१० सन १९५३ | अंक ५ पूर्णांक १७

जगावल

[रमाकान्त द्विवेदी 'रमता']

रात गइल अब जाग बटोही !
छेड़ प्रभाती-राग बटोही !
मंद-मंद मलयानिल डोलल,
के कलियन के घूँघट खोलल,
भँवरा गूँजल, पंछी बोलल,
शोर मचल बन-बाग बटोही !
दिशि-दिशि उड़ल पराग बटोही !

भोर भइल, भय दूर पराइल,
लाल किरिन पूरुब से आइल,
पथ सूझल जे साँझ भुलाइल,
जागल सूतल-भाग बटोही !
अपना पथ से लाग बटोही !
रात गइल अब जाग बटोही !
छेड़ प्रभाती-राग बटोही !

www.bhojpurisahityangan.com

–:॥ मामा–भगिना ॥:–

[श्री वृन्दावन विहारी]

"राम रतन !"

बसंतलाल अपना हाथ-घड़ी के ओर देखत नोकर के चाल कइलन। इनकर हँसमुख चेहरा सोच से कुछ गंभीर हो गइल रहे। थोड़ी एसा भी खटका होखे तऽ बाहर निकल के देखे लागस जइसे कोई के इंतजारी करत होखस। रामरतन जेकर उमीर सत्तर के पार क गइल रहे एक ओर से आवते पुछलस—

"का कहतानी बबुआ ?"

"कौनो रिक्सावाला से पूछऽ ना कि पच्छिम जाए वाली गड़िया अबहीं इसटोसनवाँ पऽ आइल कि ना ?"

रामरतन नीचे सड़क पऽ उतर के एक ओर चलन। बसंतलाल के तामा रंग के गोल सुडउल चेहरा पऽ सुरुज के जोत पड़त रहे। सिर आ मोंछ के करिआ बार से बुझात रहे कि उमीर अभी पैंतालिस से जादे के ना होई। लेवास कहत रहे कि कभी बहुत शौकीन आदमी होइहन। ओही घड़ी एगो रिक्शा आके खड़ा हो गइल।

"आ गइलऽ लाला ! गड़िया लेट रहे का ?"

"पटने एक घंटा लेट आइल।"

"ए रामरतन, सब सामान रिक्शा से उतार के रख दऽ आ इनका के कुल्ली-कलाली करावऽ। का खाके चललऽ हऽ।"

बसंतलाल रजनीकांत के दुलार से लाला कहके पुकारत रहन आ उनका खाए-पीए के बड़ा खेआल रखत रहन। ऊ बराबर कहत रहन कि 'पटना में होटल में खाके कए दिन तन्दुरुस्ती रही। अच्छा होइत कि अलगे डेरा लेके रहनऽ। धन रह के का होई जे खाए ही पीए के दुःख लागल रह गइल।'

बसंतलाल रजनी के मामा लागत रहन। अपना कोई लड़िका ना रहला से रजनी के गोद लेले रहन। रजनी के बाप-मातारी लड़िकइएँ में मर गइल रहन। ई तीन भाई रहन। सब में छोट रजनिए रहन। शादी ना भइल रहे आ ममे इहां रहके एम० ए० अब की पास कइलन। बसन्तलाल के इनका पास कइला के बहुत खुशी भइल रहे। आज रजनी पटना से आपन सब सामान लेले आरे मामा इहाँ आ गइलन।

× × ×

बाबाजी रसोई बनवलन। एक कमरा में मामा-भगिना दूनो के बिछावन लाग गइल। खा-पी के अपना-अपना बिछावन पऽ आमने-सामने दूनो आदमी बइठल रहन। एक ओर बाबाजी दरवाजा पकड़ले खड़ा रहन आ दोसरा ओरे खाट के ए गो पावा धइले रामरतन बइठल रहन। चारू ओर सन्नाटा आ एक उदासी फैलल रहे। सबके चेहरा से सोच आ दुःख टपकत रहे। रजनी एक ठंढा साँस छोड़ के कहलन—

"मामा, गोकुल आ वृन्देवन में राऊर मन बसता आ उमीर भर ओहिजे रहे के सपना देखत रहलीं। फिर आज जब रउआ ओहिजा जाए के कमर कसिए ले ले बानीं तऽ रउआँके के रोक सकेला। फिरू हम कुछ पूछे के चाहत बानी। रउआ हमार ढिठाई माफ करीं तऽ एक बात कहीं।"

"लाला, तोहरा जे पूछे के होखे से पूछऽ हम रंज काहे मानब।"

"मामा, दुनिया के सुख इहे नु हऽ कि खाए-पीए के अनघा होखे, सूते के बढ़िया पलँग आ बिछावन

www.bhojpurisahityangan.com

मिले, नोकर-चाकर हित-मित्र घेरले होखस। मामा एह में कवन सुख अपने के नइखे। रउआ खइला आ खरचला से ई धन ओराए वाला नइखे। कवन अइसन दुनिया के सुख बा जे रउआ चाहीं आ ना मिले।"

"लाला बड़ा भारी सवाल कइलऽ? जे बात के समझे में हमार जिनगी बीत गइल, आ जेकरा समझे खातिर कतना-कतना किताब छान गइलीं, साधु-संत के सेवा कइलीं ऊ बात हम समझा देब आ तू समझ जइबऽ ई कहल बड़ा कठिन बा। लेकिन हँऽ एक बात बा कि जे पुछऽ तारऽ ओकर जवाब हमरा जरूर देवे के चाहीं। सुनऽ हम बहुत थोड़े में तोहरा के बतलावत बानीं।"

बसंतलाल फेर चुप हो गइलन। एक बेर चारो ओर सन्नाटा छा गइल। घर के बाहर घोर अन्हरिया छवले रहे। झींगुर के झनकार रात के गंभीरता के अऊरू बढ़ा देत रहे। बसंतलाल कहना सुरूम कइलन—

"लाला, भगवान् के बड़ा कीरीपा कहऽ कि हमार आँख खुल गइल आ दुनिया के असलीयत मालूम हो गइल। ई जिनगी के जतना सुख तू गिना गइलऽ सब धोखा के टट्टी आ बड़ दुखदाई बा। सुख के खोज में बेआकुल मन के थोड़ा देर भुला रखे खातीर आदमी ढेर-ढेर उपाय रचले बा। दुनिया में रोज नया-नया चीज निकलऽता, लेकिन मन के हाय-हाय नइखे मिटत आ ना कबी मिटी।"

"फिर सुख कहँवा बा मामा?"

"अपना भीतर लाला! अपना भीतर खोज के देखऽ।"

"फिर बृन्दावन गोकुल गइला से का फाएदा?"

"लाला, सुख के जवन समुन्दर हमरा भीतर लहराता ओहिजा ऊ बाहरो हिलकोरा मार रहल बा। हमरा भीतर जे छिपल बाड़न उनकर लीला आज भी ओहिजा बन्द नइखे। ऊ भजन के दुनिया ह लाला! भजन करनिहार खातिर आज भी ओहिजा आनन्द आ अमरीत के घोर बरसा हो रहल बा!! अब हम एहीजा एको छन नइखीं ठहरे के चाहत। मन करता कि कइसे बिहान होखो जे तोहरा के सब हवाले कर के भागीं।"

"मामा!.....मामा!!...ई - कबो ना हो सके। ई कहाँ के न्याय हऽ कि रउआ हमरा के दुःख में छोड़ के अपने सुख बटोरे जा रहल बानीं। रउआ साथ हमूँ चलब।

"ई का कहतारऽ लाला!!"

"मामा, अब हम कवनो तरह से एहीजा ना रहब!"

"लाला!!!

"एह बारे में हम कुछ नइखीं सुने के चाहत मामा!"

× × ×

सुबह के झुलफुलाह रहे। सड़क पऽ जब तब केहू आदमी आवत-जात लउक जात रहे। दुआरा पऽ बरमदा में बाबाजी, रामरतन आ दू-चार गो भाई-बंधु लोग आँख पोंछत खड़ा रहन। मामा-भगिना हाथ जोर के, सबके आगे सिर झुका के चुपचाप उतर के एक ओरे चल देलन। जात खानी मामा अतने कहलन—"चुप रहऽ जा। अइसन बेरा में रोअल जाला?"

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ नरक के राजा ॥:—

[ले० इन्द्रदेव मिश्र, बी. ए.]

लोग कहेला कि सरग आ नरक एह धरतिये के चीज ह। सरग के आदमी सुख भोगेला आ नरक के दुख। इहो सुनले बानी जे पुनि के छय भइला प सरग से टूटि के आदमी नरक में जगह पा लेला अउर पाप के फल भोग करे लागेला। इ बात भी पक्का बा कि जइसन जे कमाई करेला ओइसने ओकरा के फल मिलेला। खेसारी बोइ के केहू धान ना नु काटी। खैर, इ त बुझे-समुझे के चीज बा। नीक-जबून दुनिया में दूनो पहिल ही से चलि आवता। मीठ-तीत दूनो मिलले बा। बाकी दुनिया के रीति ह कि मिठका घुट-घुट आ तितका-थूथू। एगो संसकिरित के असलोक में कहल बा कि हमनी का पुनि ना करीं बाकि ओकर फल चाहीला अउर पाप छूटि के करीला मगर ओकर फल ना चाहीं।

खैर हम आपन बात त कुछ कहबे ना कइलीं। त हम एक बेर रात में देखलीं जे एगो जमदूत हमरा पास आइल त हम तनी सकपकाइले पूछलीं जे बतलाव भइया नू हमरा पास कइसे? हम त आजु तक अपना से दोसरा के किछु तकलीफ ना देलीं, साधु अइसन जिनगी बितवलीं आ जहाँ कहीं रहलीं सरग के सुख भोग कइलीं। का हमार आजु तक के कुल्हि पुनि के कइल हवा हो गईल। अतना सुनते त जमदूत के काठ मारि गइल आ घिघिया के लागल कहे कि हमनी के आँगछे बड़ा खराब ह। का करीं लाचार बानी जा। हम त राजा नांव के एगो बढ़िया परवाना लेके आइल बानी। नरक में राजा के जगह खाली हो गइल बा। एक से एक बढ़ि के लोग आपन आपन किस्मत आजमावे खातिर सिफारिश ले के पहुँचता, बाकी नरक के कमिटी रउरे के सिरताज बनावे के ठीक कइले बा। काहे कि ओहिजा के बहुत से लोग राजा नाँव से वाकिफ बा आ हम त कहवि जे इहो बड़ा भाग से सुयोग मिलेला। राजा पुनि-परताप से नरको सरग बनि जाई आ हमनियों के उधार हो जाई। हम त अब जातानी। हँ—ना के जवाब जलदी देबि।

जमदूत के गइला प हम बड़ा नब-छब में पड़लीं कि का करीं। साथी लोग कहल जे सरग के गुलाम से नरक के राजा बनल अच्छा ह। Better Be a King in hell than be a slave in henven. हमरा भी अभिमान रहे कि नरको में रहि के हम नरकी ना बनि सकीं। राजा बने का फेर में भट हम हू "जोरू न जाता, अल्लाह मियाँ से नाता' वाला मसल के अनुसार नरक से नाता जोड़ि लिहलीं आ कहलीं कि जिनगी भर सरग में रहे से काम ना चली। तनी नरको के नजारा देखे के चाहीं कि नरक में कइसन कइसन जीव परल बाड़ें आ उनुकर इंतजाम कइसे चलता। नरको के त कई भेद बा—कुंभी, रौरव, महारौरव, तपन, ...

.....सब एके तरह खराब नइखे, सबसे बड़ त इ बात बा कि राजा बनि के हम नरक के विधाने पलटि देबि जे उहो एगो सरग के छोटमोट टुकड़ा बनि जाई।

हँ त नरक में पहुंचला प पवलीं कि तमाम दुरगंध उठि रहल बा, बिरगिन आ बासना का मारे नाक नइखे दियात, खाइलो पियल दुलम हो गइल। बाकी राहता

www.bhojpurisahityangan.com

के थाकल रहीं से रात में थोड़ा नीनि जरूर आइल, ओहिजा लोगन के हम अनेक दुःख से पीड़ित पवलीं। चारू ओर चीख, कराह आ रोआई रहे जहवा हम जाईं आदर मान त खूब होखे आ सबके देखीं जे ऊ इसो नेह जोड़ले बा। एगो जीव के हम बड़ा कष्ट में पवली। ऊ आरजू करिके कहल जे हमार उधार पहिले होखे के चाहीं। सबके खातिर कइके हम जलदिये अगलीं, काहे कि ठहरल ना गइल। हम पहिले से किछु इंतजामो त कके ना गइल रहीं।

दोसरा बेरि के जातरा में हम नकाब, खुर्दबीन, अंगरखा, बहुत से छूत छोड़ावे वाली दवा, दुर्गंध-मारक दवा (Deodorents) साथ में लेले गइलीं जे कब कवना के जरूरत पड़ी। आ जरूरत त सबके रहबे कइल। साथ में एगो 'सुश्रेन' बैद के भी ले लीं कि कमसे कम गंदगी से का हानि बा एकर लेकचर त दियाई। सुनले रहीं जे नकाब आदमी के जहरीला गैस से भी बचावेला त उ बदबू से काहे ना बचाई। एही से ओकरो के ले लेलीं। हमरा सोरह आना ई अकीन हो गइल कि नरक आ सरग में अब सीधा संबंध हो जाई आ दूनो जगे के आवाजाही से नरक के रीति रिवाज, कायदा-कानून रहन-सहन सब में सुधार हो जाई। दोसरकी जातरा में जा एगो जीव से भेंट भइल जे खातिरदारी में बराबर साबित रहे। पाछे पता चलल जे ऊ नरक कमिटी के खोफिया ह आ एह खातिर तनात कइल बा कि केहू नरक के दुख नु बतियावे। बाकी हम त खुर्दबीन ठीक कइके दूर-दूर के बात पता लगावे लगलीं आ इ भी पता लगा ले लीं कि महक आ बासना के जरि कहाँ तक खिलल बा। पता चलल कि नरक के सरग बनावे, खातिर एकसे एक धुरन्धर बीर आइल लोग, जी-जान से कोशिश कईल बाकी एवरेस्ट-बिजेता अइसन केहू किस्मत के पुरजोर ना उतरल। सरगो से बहुत बेर सौगात भेजइल बाकी जेकरा चाहीं ओकरा ना मिलल। बीच ही भाफ बनि गइल। जेकरा भाग में पाप के बहुत कड़आ फल भोगे के लिखल बा ओकरा सरग के सौगात भला का भेटाय।

त हम चहलीं जे रात-दिन कमर-तोड़ मिहनत करि के नरक के सरग बना दीं। जलदी में जहाँ तक हो सकल हम बहुत कुछ रास्ता साफ कइलों। अंखफोर करे खातिर विद्यामंदिर के असथापना त हो गइल रहे बाकी ओकर जोति ना फैलल रहे।

पुजारिये ठीक ना होखसु त मंदिर का करी। हम सरग के कायदा कुरसी त जाते लागू कइ देलीं बाकी डर रहे जे एका-एक बिधान बदले में हुकूमत के मशीनरी तड़कि नु जा, एह से तनी हाथ रोकि के कलम चलावे के पड़े। गनीमत इहे रहे जे ओहिजो कागज कलम के किछु खाज चलि पड़ल रहे ना त पहिले त ओहिजा इ सब फजूल के चीज गिनात रहे। हमरा अकीन बा कि इहो चोज ओहिजा सरगे से गइल होई। खैर अतना त अब बुझाये लागल कि नरको के उधार हो जाई आ हवा भी अइसन तैयार भइल कि ओहमें सरग क किछु-किछु खुशबू मिलल रहे।

बाकी एक दिन हम देखतानी कि सब हमार हरबा हथियारे नु गायब बा। नु त नकाब बा, नु खुर्दबीने न अंगरखे (अंगरक्षक वस्त्र)। इहाँ तक कि दवा इलाज के बकसा तक गायब बा। अब त उहाँ ठहरलो नु मुशकिल हो गइल। आपन जीव बचाइये के नु केहू के केहू भलाइ करी! मन में हम कहलीं कि जे जहाँ बा तहें ओकर सरग बा। नाहके हम नरको में का ठेलाठेली करे जाईं। बस आपन बाचल-खुचल लिबड़ी बास्ता लेके भागिये नु अइलीं। त ले बिहानो हो गइल आ नीनि टूटल त देखलीं कि दिन ढेर चढ़ि गइल बा। बाद एकाध साथी से कहलीं त लोग कहलन जे 'बड़ नु खराब सपना रहल हा'।

॥ मसान ॥

[रमाकान्त द्विवेदी 'रमता'

नदी किनारे धुआँ उठल, आ
लहलह लहकत आग !

केने डाँक परल, अचके में
कहाँ बुजर घहराइल,
कहाँ उठल हचिकाल, आज से
केकर नावँ बुताइल,
केकर टूटल बाँह दहिन,
केकर टेंगुरी भुलाइल,
के आँचर के लाल गवाँवल,
केकर कवर छिनाइल,
केकर जिनगी भइल अकारथ-
गइल सिंगार—सुहाग !

गाँव-नगर, सब साथ-सँघाती,
हित-कुटुंब— परिवार
भइल पपिहरा धावल-धूपल
कइल बहुत उपचार,-
जंतर--मंतर--जड़ी-टोटरम--
अछत— भभूत— दवाई
कवनो जुगुत चलल, ना आखिर
जम्ह के फिरल दुहाई;
तजि के पिंजर उड़ल विहंगम
गइल अकासे लाग !

धरल रहल मरजाद-महातम
गरब— गुमान— बड़ाई,
इहे जगत-व्यवहार, घटल ना
दुनिया एको-पाई,
मलि-मलि अतर-फुलेल लगावल
पालल प्रेम-कगर में
सोना अइसन देह सुघर
हो गइल राख छन-भर में,
छन-भर के मसान के मेला,
छन-भर के बैराग !
नदी-किनारे धुआँ उठल, आ,
लहलह लहकल आग !

———:※:———

www.bhojpurisahityangan.com

दोष केकर ?

[ले० प्रभुनाथ मिश्र]

"बेटा हमनी का एगो नोकर के काम रहल हा नु ? देख, हम एकरा के ले आइल बानी।" माई के कहत सुननी।

हम देखनी ऊ करिया निमन गठन वाला एगो जवान रहे। उमरि सतरह, अठारह के करीब होई। कद ठीक सवा पाँच फूट के होई। मुंह गोल आ आँखि बड़े बड़े रहे। गलवा तनी फुललाह लागत रहे। माथ के बार बड़े-बड़े आ बेतरतीब।

नमस्ते बाबू जी ? कहिके हमरा सोझा मुंड़ी नवा के खड़ा भइल रहल। हम ओकरा के बइठे के कहनी आ परेशानी के स्वर में पूछनी—"कतही, नोकरी कइले बाड़े ?"

"जी मालिक, चार महीना !"

"उंहवाँ से काहे छोड़ले ?"

"मालिक, तंग आ गइल रहनी।"

"इहंओं से भागि जइबे तब ?"

ऊ चुपचाप बइठल रहे। तले हमार श्रीमती जी बीचे बोलि उठली—"त का बिगड़ि जाई, एकरा के राखि लीं ना !"

हमरा अच्छा त ना लागल बाकिर कहनी कि "त का भईल बा राखि ल।"

❀ ❀ ❀ ❀

कुछ दिन का बाद हमरा बुझाइल कि माधो—इहे ओकर नाँव रहे—काम-काज करे में बड़ा होशियार बा। हमार कमरा भी पहिले से खूब साफ रहे लागल। किताब वोगैरह सब ठीक से रहे लागल। माधो में भी अब गते-गते फरक परे लागल। जवना घरी ऊ आइल रहे, तवना घरी ठीक से कवनो बात ना बोल सकत रहे। बाकिर अब ! ना ऊ गंदगी रहल, ना ऊ बउराह लेखा रहे। कुल्ही काम खूब होशियारी से करे लागल।

एक दिन घर से बाहर हल्ला-गुल्ला सुनि के जागि गइनी। बाहर जा के देखनी कि माधो एगो पड़ोस के सिंधी से गेंग कइले बा। हमारा के देखि के तनी हड़बड़ाइल, आ फेर हमारा के सुना के बोले लागल—

"देखीं मालिक, मछरी आ ना जाने बकरी के हाड़ एह बाल्टी में हे डाल गइल बा। हमनी का ना बासाला का ? अपना घर के सामने वाली बाल्टी में काहे ना डालेला ? रोज के त इहे हाल बा। बहू जी त तंग हो गइल बानी। हम खूब फजीरे उठि के झरोखा में देखत रहनी हाँ, तले ई सिंधी के बच्चा——"

"जबान सँभार के बोल ! नीच कहीं के" सिंधी जोर से कहलस।

हम शांती से आ गंभीर होइ के ओकरा से कहनी —

"महाराज ! जवना हाथ से कूड़ा डलले बानी तवने हाथ से एक हाली निकाल लीं।,

हमरा अवरु कुछ कहे के ना पड़ल। ऊ हाथ जोड़ि के बोल ले :—"सरकार, जवन हो गइल तवन होइ गइल। अब अइसन ना होई।

हमहूँ बात खतम करें खातिर माधो के भीतर भेज दीहनी। ओह दिने हमरा मालूम भइल कि माधो हमरा परिवार के साथे कतना रीझि-पीझि गइल बा।

❀ ❀ ❀

अब माता जी माधो से अनराज रहे लगली।

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा के डांटे-फटकारे लगली। उहो कभी कभी दबले जबान से उनका के जवाब देबे लागल। बाकिर जेही (जबे) हमार श्रीमती जी कहस :—"चुप माधव ?" उ सट से चुप हो जाइ। एह से माई के खिसि अवरू बढ़ि जाइ, ऊ हमरा से कई हाली कहि चुकल रहली कि बबुआ, एकरा के निकाल द, अब ई सिर पर चढ़ि गइल बा।" बाकिर हमार मेहरारू ओकर सिफारिस करसु।

दोसरा दिने सांझी का बेरा जब हम आफिस से घरे लौटनी त केवारी खुलल देखि के मन में भइल कि चलीं पहिले अपना मेहरारूये के घर में चलीं। जेही आगे बढ़नी, एक ब एक कान में भनक परल ?—"मालिक के दफ्तर चलि गईला का बाद एक घंटा खातिर रोज हमरा पास आ जाइल करिहे। अच्छा अब तें जो, अब उहां के आवे के बेरा भइल बा। जाइ के कमरा के सफाई कइ दे।'

हम गते-गते गोड़ पीछे हटाइ के अपना कमरा का ओर लौट गइनी। एकरा बादि जबन छोट-मोट घटना भइली सऽ ओह से कभी हमार शंका घटि जाइ कभी बढ़ि जाइ।

बात त छोटी चुकी रहे, बाकिर ओह दिन हमार शंका एक-ब-एक बढ़ गईल। बात रहे कि माता जी हमारा ओर देखि के कहे लगली "राशन के जमाना बा बबुआ हमरा त सोच परल रहता कि कइसे बेवत बान्हि कि सब के आँटि जाइ, आ ई बा कि दस रोटी खइला बिना उठते नइखे। ऊपर से एक छीपा भातो चाहीं। आदमी ह कि राछछ अतने रहीत त कवनो बात ना, एकर पेट भरी, एह खातिर बबुआ ब कई दिन से एके जून खात बाड़ी। हमरा से त अब ई नइखे देखि जात। दू टाका के नोकर के एह तरे सिर पर चढ़ा के महकावल।

माता जी आगे ना जाने का-का कहत गइली, हमरा दिमाग में त एके बात घूमि-फिर के चक्कर लगावे लागल।—"एकर पेट भरी एह खातिर बबुआ ब' कई दिन एके जून खात बाड़ी।'—विचार के घोड़ा दउरे लागल बबुआ ब' एके जून खात बाड़ी। ठीक ! बाकिर काहे खात बाड़ी ? एकर पेट भरी एह खातिर ! काहे ?... एह काहे पर आके गाड़ी अँटकि गइल। ई "काहे अवरू बड़ होत गइल। काहे ? काहे ?? काहे ??? बिचार चलत रहे ......"मालिक के दफ्तर चलि गइला का बाद एक घंटा खातिर रोज हमरा लगे आ जाइल करिहे। बुझाइल कि समूचा धरती डोलत बा। हम आँख बन कई लीहनी तले कान में सुनाइल :—"बेचारा दिन भर काम करत बा। पेट ना भरी त काम करे खातिर ताकत कहाँ से आई ? श्रीमती जी सफाई देत रहली। हमरा प्रश्न के उत्तर त मिल गइल। ठीके त बा, ताकत कहाँ से आई ? बाकिर ई समाधान अधिक देर तक ना ठहर सकल। फिर "काहे बनले रहल।

❀ ❀ ❀ ❀

एक दिन साँझी का बेरा माता जी कहीं से एगो दोसर नोकर ले अइलीं आ माधो से कहली "तू काम से अब हट जा। तोहरा जगह पर अब ई काम करी। ई खबर सुनि के एक छन त ऊ सकुचा गइल, बाकिर फेर सँभर के बोललः 'हम ना जाइबि !'

माता जी कहली "त का ई तोरा बाप के घर ह ?

माधव बोललस 'जब तक बहू जी ना कहिहें हम इहाँ से ना जाइबि।

माता जी अनसाइ गइली। बोलली "अच्छा हम देखत बानी कि एह घर के मलिकाइन हम हईं कि ऊ ह !

अतने में हमार मेहरारू स्नान-घर में से निकलि के बोलली "आज ई का बखेड़ा उठवले बानी ?

हम खड़ा खड़ा सब देखत रहनी आ सोचत रहनी।—आखिर एह माधो के बबा के हमारा घर से अतना मोह काहे बा ?

माता जी कहली "बबुआ खड़ा खड़ा का देखत

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़। ओ बबुआ ब से हुकुम लेबे के बा का? एकरा के जल्दी इहाँ से निकालऽ! हम ओकरा के धइ के फाटक का ओर ले चलनी। खींचातानी में माधो का जेब से दू रुपया गिर गइल। माता जी एक प्रकार के बिकृत हँसी हँसि के कहली "देखलऽ बबुआ, हम काल्हुए से खोजतानी कि अलमारी पर जवन दूगो रुपया धइले रहनी हा तवन का भइल?

माधो हमरा गोड़ पर गिर के बोलल 'मालिक हमरा के राखि लीं। हम जिन्दगी भर बेगार करबि। हमरा रुपया के काम नइखे। खाली हमरा के इहाँ रहे दीं।

'बदमाश, त एहिजा रहला से फायदा का? ठीक से रहे के रहित त चोरी करिते!

'मालिक हम रुपया नइखीं चोरवले, ऊ त हमरा तनखाह में से बांचल रहल हा।

'त का माता जी भूठ बोलतारी?

'हँ, मालिक!

ई बात कहत कहीं कि ओकरा गाल पर दू थप्पड़ लगा के हम कहनी 'अगर तोरा के जेल ना भेजवा दीं त कहिहे।

माधो हमरा मेहरारुओं से राखे खातिर कहलस बाकिर ऊ कुछ ना बोलली। फेर ऊ बोलल 'जब केहू नइखे चाहत त हमहीं काहे कुकुर लेखा पड़ल रहीं। अच्छा, अब जा तानी मालिक!

जब ऊ जाये लागल त हमार मेहरारू ओकरा के बोला के कहलीः 'माधो, आपन किताब आ रुपया लेले जो! बाकिर ऊ रुकल ना चलिए गइल।

जब माधो चलि गइल त हमार मेहरारू माता जी से कहली 'रउआँ दू रुपया खातिर भूठ बोलला के कवन जरूरत रहल हा! माता जी के चेहरा फक-हो गइल। ऊ कहते गइली—'अपने का पहिले त ना कहले रहनी हाँ कि राउर दू रुपया गायब बा। हम आजुए ओकरा के अपना हाथ से दू रुपया देले रहनी हाँ, ओकरा तनखाह में से अबरू रुपया बकाया बा।

हम माता जी का ओर देखनी। माता जी कहे लगली "हँ, बबुआ, गलती हमरे ह। बबुआ ब के कपार पर ना जाने कवन धुन सवार हो गइल रहल हा। ओह टाका के नोकर के अतना सिर पर चढ़ा ले ले रहली हा कि देखे वाला कुछ अवरुए सोचे लागीत। फेर तहरा गइला का बाद रोज एक-दू घंटा ओकरा के पढ़ावत रहली हा। एह से ऊ मुँहे लागत रहल हा। हम ओकरा से कइसहूँ पिंड छोड़ावल चाहत रहनी हाँ।"

हमरा चकर आवे लागल। हम एह टका के नोकर के रहस्य समझे का चक्कर में पड़ गइनी। हम निहचय ना कइ सकनी कि एह में दोष केकर बा।

❀❀❀❀❀❀❀❀❀

राजस्थान के एगो लोक-कथा

[श्री अगरचंद नाहटा]

राजस्थान लोक साहित के भंडार' ह। लोक गीत नियर लोक कथा भी इहाँ हजारन के तादात में लिखल आ जाबानी मिलेला। एहनी के कहे के ढंग बड़ा ही अजुबा होला। कथा कहे वाला अतना रस के साथे कहेला कि ओकरा रस के पवनारा बहुत जोर से बहे लागेला आ सुने वाला ओह में अइसन डूब जाला कि ओकरा आपने पता ना रहे। ई सब कथा छोट बड़ सब तरह के होला जेकर विषय भी अनेक होला। कवनो सिंगार आ परेम के होई त कवनो नीति आ ज्ञान के।

दोसरा प्रांतन के लोक कथा लिखल नइखे एह से

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ सभ बाँचल भी नइखे बाकी राज स्थान आ गुजरात के सैकड़ो लोक कथा के जैन विद्वान लोग अपना ग्रन्थन में लिख ले ले बाड़न। कई कथा के विसय में अलग काव्य भी लिखा चुकल बाड़न स। राज स्थानी गद्य में भी जवना तरह से ऊ कथा कहल सुनल जालन स पछिला तीन सै बरिस से ओकरा के लिखे के कार लागल बा। एकर नतीजा ई भइल बा कि सैकड़ों कथा लिखल मिलत बाड़न स जवानी त बहुत जादे चलते बाड़न स लिखलका कथवन में प्रेम आ विरह के ही जादे कथा बाड़न स बाकी नीति, सिच्छा आ ज्ञान के भी बहुत कथा लिखल मिलत बाड़न स। कुछ कहाउति के भी कथा मिलल बाड़न स। 'जैन जगत' में जवानी मिलल एगो राजस्थानी लोक कथा श्रीयुत मुरलीधर जी व्यास छपवले बाड़े। ऊ कल्पना में हाल ही में छपल हा। जबानी लोक कथा के संग्रह के काम चालु बा। लिखलका में से कहाउतन के तीन कथा पहिले छप चुकल बा। इहाँ एगो नीमन सीख देबे वाला कथा हमरा अपना संग्रह का पुरान गुटका में से देल जात बा। कथा बहुत छोट भइला पर भी एकरा में एगो मंत्री के मेहरारू अपना धरम के बचावे में जवन अजगुत बुद्धि लगवले बाड़ी कि उनकर ऊ सुझ-बुझ हमनी के अचरज में डाल देत बा। एह तरह के अगर बहुत कथा प्रचलित बाड़न स जवना के बिटोर होखे के चाहीं। असल कथा ई ह :—

एक राजा के सामने मंत्री के डाही कवनो चुगलखोर ई बात चला देलस कि मंत्री के मेहरारू एकदम सुघर आ सही ह। राजा ओकर बात सुन के वोजीर का मेहरारु पर मोहित होके उनका से आपन मतलब निकाले के सोचे लगलन बाकी मंत्री का घर में रहते अईसन हो ना सकत रहे। एह से वोजीर के कहीं बाहर भेज देवे के उपाय सोचल गइल। राजा कवनो दुसमन पर चढ़ाई करे के हल्ला कइलन आ अपने जाये के तइआरी करे लगले। तब वोजीर कहलन कि एह मामुली काम खातिर हमनी सेवके काफी बानी जा अपने का तकलीफ करे के जरूरत नइखे। बादसाह त बहाना कइले रहन ऊ अपने ना जाके वोजीर के ही भेजे के रहे। एह से मन लायक माँग कइला पर ऊ वोजीर के प्राथना मान के उनके भेज देलन।

वोजीर का चल गइला पर अच्छा संजोग समुझ के बादसाह उनका घरे जाये के विचार कइलन। वोजीर के मेहरारू का केहू हितचिंतक से एकर खबर पहिलही मिल गइल रहे। ऊ बादसाह का अइला पर अपना सील के कइसे बचइहन एकर उपाय सोचली आ अलग-अलग रंग के सात आठ बोतल में एके सरबत भर के महल के कइ जगह पर रखवा देली आ सगरो गिलास धरवा देली। ठीक समय पर बादसाह अइलन आ वोजीर के जीत के खबर देबे अइली हाँ अइसन मीठ-मीठ वचन बोले लगलन वोजीर के मेहरारू उनकर नीमन आगवानी कइली आ बड़ा आव भगत के साथ ओह विविध रंग वाला सबत के पिआली में भर के पीआवे लगली। बादसाह कहलन कि खाली सीसी के रंग भिन्न बा स्वाद त सभ के एके बा का बात ह? तब वोजीर के मेहरारू कहली कि हजूर मेहरारू जाति सभे एके ह उनका रूप के विलगाव भगवान के देन ह। एह रूप पर मोहित उचित नइखे। माँ, बहिन, बेटी भी त औरते ह। उनका रूप पर मोहित भइल बेवकूफी होई। हम त अपने के प्रजा हईं एह से अपने के बेटी भइलीं बाप के खराब नजर अपना बेटी पर परे त कतना अनुचित बात समुझल जाई। सोचीं! अपने का प्रजा पालक होके एह तरह से सती साधवी मेहरारून के सील तूरे पर उतारू होइब त उनकर रखवार के होई।

www.bhojpurisahityangan.com

राजा मंत्री के मेहरारू क अकिल भरल बात सुन के आपन गलती कबूल कइलन आ उनका के अपना धरम के बेटी बना के अपना घरे चल गइलन।

कहानी लिखल त एहीजे ले मिलल बाकी ओकरा आगा एकरा से संबंध रखे वाला कुछ दोहा मिलल बाड़न से जेकरा से पता चलत बा कि वोजीर के लवट अइला प उनका बादसाह के अपना घरे अइला के बात सुन के अपना मेहरारू के सतीपना प शंका भइल आ ओकर निरूआर उनका ससुर आ राजा के बचन से भइल। रास्थानी भासा में मूल कथा एह रूप में बा :—

"बात" पातिशाह पासे चुगली हुई जु वजीर के घरे बैर छै सु बहुत रूपवन्त छै। तद पातिशाह दी ठो जु इयेनुं कठे ही मिल ही जे तो—इयेरी बैर देखी जे। तद पातिशाह एक दिन बोलियो जु हूँ मुहिंमनुँ चढ़ीस। तद वजीर बोलियो जु मोनुं हुकम हुवे तो हुँ जाइस। सु पातिशाह हुक्म कियो। वजीर घर सुं विदा हुई चढ़ीयो। पछे कितरे हेके दिने पातिशाह वजीर की बैर देखण आवणनु तैयारी की बी। तद वजीर री बैर नुं खबरि हुई। तद वजीर की बैर शीशी रंग ७–८ री जुदी-जुदी खूंण में राखी कनारे प्यालो राखीयो। इतरे पातिशाह आयो। कह्यो हम वजीरे रे घरे फतेरी ममारखी देव आयो हुं। तद वजीर री बैर नजर किवी। पछे शीशीयाँ सरब शरबत सुं भरीयाँ छै। सुपातिशाह नु पायो। पातिशाह बोल्यो "इसमें स्वाद एक सरीखा है। "तद (वजीर पत्नी) बोली कह्या स्वाद सरब एक सा ही है, रूप परमेश्वर का दिया है" तद पातिशाह कह्यो तुं मेरी बेटी है। प्रथम दुहो—वजीर की बहु आपरा पिता नुं लिखियोः—

दूहाः—चुगली नीर विटालियो, लापर चढ़यो कलंक।
चन्नन न बोडे हंसलो, कही पंसी पीवंत।
ताहरा वजीरी बहुरो बाप आयो हद जमाईनु
पुछीयो। तें किसे वास्ते छोडी। तद जमाइं सु
सुसरों कहे—
हम तुम दिन्ही तत्वावडी सुकुलिणी सुकित्त।
किण कारण तें परहरी सो विचार कहत्त॥
मैं दिन्हीं सै बरि सुल्लीएी सुलुज्ज।
किण कारण दण परिहरी, कहो भरोसा मुझ।
अबे ससुरो सों जमाई कहे—
दूहा—जिण डंडे के हरी गयो, लाजी [illegible] तिणांह
सो खण तिणही पनडेन चिनीहरिणाह।
दीठो खोज पचायणा, सरकाले चल तीर।
तेज मृगा ना पिवे, खावे रह चाकादीर।
अब बैर कहे–केहर केश भुभंग मणि सरणाई सुहडांह
सही पयोहर विप्रधन पड़ीसी हाथ मुवाहं
तद पासिशाह कहे
केहण सहीजसर गयो, कहीज काल भुवेण।
पाल चढे चल जोइयो चूँचन बुडी तेण।
वजीर ही बैर पातिशाह नु इहा कहे–
अजली जले त जल बुझे, जो जल हत जले काइ।
किसी प्रकारे दीवला, जो घर आयो सांइ।
किसे पुकारू किस कहूँ, किस शरणागत जांह।
साम विरतो आपणो कहती लाज मरांह।

www.bhojpurisahityangan.com

उदासी

श्री दिवाकर लाल 'अंकुर' बलिया

खुशी भइल बा सगरो दुनिया, हमनी किहाँ उदासी।
ना जाने जे कवले सुतिहें, ई भोजपुर के बासी।
जिन्ह लाठी से सजग करवले, सर में बांध पगरिया,
अचरज बा निर्भेदे सुतले, कब से ओढ़ि चदरिया।
कुम्हकरन के एह निनिया से, गाँवों नगर लुटाता।
हीरा के एह लूट पाट में, कोइला इहाँ फेंकाता।
अपना स्वारथ खातिर दुनिया, कतना धूनि मचावे,
जान देइ, हड़ताल मचा के, आपन बात सुनावे।
ओही के ई आजु नतीजा, सुनलीं कान लगा के।
सभ के भासा मातृ कहावे, भोजपुर-बासी ताके।
हिन्दी, उर्दू कोरवाँ ओड़िया, बंगला आ संथाली।
राज-नदी में सभे नहइली, छूटल सबके काली।
एह बोली में सिच्छा होई, संग मैथिली मुंडारी।
हाय! हाय! मगही-भोजपुरी, ताको आजु बेचारी।
चउदह जिला फइलल जेकर, नाती-बेटा बाड़न।
ऊहे आज बेकासा पड़के, रोवे कवना कारन।
एह प्रदेश के सिच्छा खातिर, ईहे माध्यम चाहीं।
छोटे-छोटे लइकन खातिर, हिन्दी-उर्दू नाहीं।
हिन्दी-उर्दू एह गँवई में, लिखतो बोझ जनाता।
एह से अब अन्हुवाइल छोड़ऽ, इहे नीक बुझाता।
एह जगरम के दुनिया बीचे, सूतल आजु अनेर।
जानत-नइखऽ कबहीं-कबहीं, लागत हाथ बटेर।
आवऽ अबकी मीलि-जूलि के, एक आवाज उठाईं।
आपन बोली भोजपुरिया के, सरकारी बनवाईं।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के शेक्सपियर—भिखारी ठाकुर

[श्री वीरेन्द्र किशोर सिन्हा बी० ए०]

साँवर रंग के छरहर देह अवला एगो लाम बे मोछ दाढ़ी के बूढ़ बाकिर टाँठ अदिमी के अपना आँखि के सोझा अपने के ठाड़ा कऽ लीं त जान जाईं कि उहे भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर हवन। आज से ढेर दिन पहिले राहुल बाबा इनका बारे में लिखले रहीं कि "भिखारी भोजपुरी का शेक्सपियर हैं उसके गीतों में जादू का असर है।" आज अपना पढ़ला लिखला का जोम में भले हमनी का भिखारी के जेहन के बूझे के कोरसिस नत करीं जा, बाकिर उ दिन दूर नइखे जब भोजपुरी में भिखारी ओइसहीं पुजइहन जइसे अँगरेजी में शेक्सपियर। काहे दोनी दुनिया के ई रीति हो गइल बा कि ऊ कवनो बड़ से बड़ कवि भा कलाकार के ओकरा जियते-जिनिगी में ना मनलस बाकिर ओकरा मुअला प ओकर पूजा कइलस। संस्कृत में भवभूति, अंगरेजी में शेक्सपियर, उर्दू में गालिब सबके कपारे इहे करम ठोकाइल। भिखारी एकरा में काहे पाछा रहस? उहो त एगो लमहर कवि ठहरलन। भिखारी खुदे इ बात के लिखले बाड़न।

"अबहीं नाम भइल बा थोरा।
जब ई छूट जाइ तन मोरा॥
तेकरा बाद पचास पचीसा।
तेकरा बाद बीस दस तीसा॥
तेकरा बाद नाम होइ जइहन।
पंडित, कवि, सज्जन जस गइहन॥"

साँचो सोलहवीं सदी के शेक्सपियर आ बीसवीं सदी के भिखारी में बड़ा मेल खाला। शेक्सपियर जान जाई कि पहिले-पहिले पाठशाला में पढ़लन। बाद में कहल जाला कि उ तनी-मनी ग्रीक आ लैटिन भाखा के पढ़लन। मतलब ई कि ऊ नाहिंए के बरोबर पढ़ल रहन। एकदम इहे बात भिखारिओ के साथे बा। इहो पठशले तक ले पढ़ल बाड़न। अपना पढ़ाई के बारे में लिखले बाड़न कि—

नौ बरिस के जब हम भइनी,
विद्या पढ़न पाठ परै गइनी।
बर्ष एक तक जबदल मती,
लिखे न आइल रा म ग ती॥

बाकि एनेकावर गोसाईं जी के रमाएन, सूरदास के पद आ धरम के ढेरमानी बातन के गेयान उनका अतना हो गइल बा कि सुनला प एक बेरा नीमन-नीमन बिदमान के अचरज हो जाला।

शेक्सपियर नकल उतारे में बड़ा तेज रहन। लंदन में नकल उतारे में इनकर बड़ा नाँव रहे। भिखारिओ में ई गुन सोरहो आना समाइल बा। 'बेटी बेचवा' नाटक में लालची बराहमन के अइसन नकल उतारेलन कि देख के मन हुलस जाला। आज सत्तर बरिस के ढरकल उमिर में भी जब निसेबाज बन के आवेलन त अइसन बुझाला जइसे पचीस बरिस के खाँटी जवान होखस।

दुनो के बिसय में समय आ असथान के लेके बड़ा फरक बा। साँच पूछीं त एह बात में भिखारी कतना जगे शेक्सपियर से आगे इकल जालन। कला के सबसे लमहर गुन ई ह कि ऊ अपना समाज के, अपना समय के ऐनक होखे। शेक्सपियर के नाटक प्रकृति के ऐनक त भइल बाकिर अपना समय के समाज के ऐनक ना हो सकल। भिखारी अपना

www.bhojpurisahityangan.com

बखत के समाज में फैलल दोस के बहुते बढ़िया रूप हींचले बाड़न। 'बेटी बेचवा' में उ लइकी जेकर बिआह ओकरा दादा के उमिर के मरद से भइल ससुरा जात खानी अपना मतारी आ बाप से रोके कहऽतिया कि—

"जमते मइया माहुर देके काहे ना दिहलू मारी।
दूध पिया के तेल लगा के काया के दिहलू सँवारी।
आ

"अब मोर छछनवलऽजियरा।"

जाहघरी नाटक में लईकी ई कह-कह के रोये लागेले ओह घरी पथरो के करेज राखे आवला के आँखि से लोर चूये लागेला। अइसन-अइसन जगहा प भिखारी हमनी का सोझा समाज-सुधारक के रूप में आवेलन। उनकर ई रूप के बारे में हम दोसरा लेख में लिखब।

शेक्सपियर के नाटकन में हँसी बड़ा अनघा बा। आलोचक लोगिन के राय में कवनो दोसर लेखक हँसी के अतना नीमन नमूना नइखे देखवले। 'मच एडो एबाउट नथिंग' नाँव के नाटक में एगो कुवाँर मेहरारु बीट्रिस से एगो कुवाँर मरद बेनडिक कह ता कि "तूँ कवनो मरद से परेम ना करऽ। तोहरा परेम ना कइला से कम-से-कम ओकर मुँह नोचाए से बाँची नू।" एह पर बीट्रिस कहऽतिया कि "जो तोहरा अइसन मुँह होखे त नोचइला से उ बदसूरत ना हो जाई।" अब तनी भिखारी के हँसी देखल जाव। 'बेटी बेचवा' में दुलहा के आँखि में काँची देख के एगो मेहरारु पूछऽतिया कि इनकर आँखि किचिआइल काहे बा? ओकरा जवाब मिलऽता कि लइकाइ में दुलहा अतना घाव खइले बा कि सभ आँखि मुहें इकल रहल बा। बताई त, कतना बढ़िया कुट बा!

शेक्सपियर लिखत रहन पइसा कमाए खातिर अपना देस चाहे समाज के भलाई खातिर ना। भिखारी अपना आन्हर समाज के आँखि लिखलन देवे खातिर, ओकरा जहालत के जर से भगावे खातिर। एह से शेक्सपियर के नाटकन में शब्द के देखावा आ मजाक कतहीं-कतहीं अतना बा कि उनकर चीज नीचा दरजा के हो गइल बा। भिखारी के एक-एक सब्द एक-एक मजाक में सत्य लुकाइल बा। 'टुएल्फ्थ नाइट' में खाली देखे वाला के खुस करे खातिर शेक्सपियर सर एंड्रिड नाँव आवला पात्र के रचले बाड़न जे नायिका के बाप के साथे पी के फजूल बतकही करऽता। ओकरा ना रहला से नाटक के कवनो नोकसान नइखे होत। अइसने बे मतलब के बात 'एज़ यू लाइक इट' में बाड़न स। भिखारी कतहीं हलुका हो बात कइले बाड़न त ओकर आपन तथ बा। 'भाई-बिरोध' नाटक में कलहिन मेहरारु अपना देवर के झुठहुँ अछरंग लगावतिआ त ओकर मरदा कहऽता कि "ऊ त अब हीं लइका बा। ओकरा का उबड़-खाबड़ बुझाये के बा हो।" बात हलुक बा, बाकिर बिना तथ के नइखे। लइका जेकरा मुँहे लाग जालन स ओकरा के लंगो-चंगो करवे करेलन स। दोसर तथ कि ई कहला से ऊ मरद के चरित्र के बारे में पता चलऽ ता। ऊ हू बहू मेहरारु के कहल माने आवला नइखे बुझात। अपना मेहरारु के ई बात के ऊ बेकुफाना बूझऽता आ मजाक में उड़ा देता। भिखारी के कवनो पात्र बे मतलब के नइखे। इहाँ तकले कि एगो मह्सूली रहता चलत अदिमी आवऽता त कवनो गम्हीराहे बात कह के चल देता। एही 'भाई बिरोध' में जब उपदर अपना छोट भाई के जान मार देता त रहता में मिलल एगो अदिमी कहऽता कि "बाप रे बाप! तूँ अपना एकलाद के भाई के ना भेंइलऽ त हमार होखबऽ। जा तूँ अपना के चेत।" कतना गेयान से तर बात बा!

शेक्सपियर के नायिका लोगनी के बड़ तरीफी होखेला। भिखारिओ एह बात में कम नइखन। लेडी मैकबेथ के अइसन मरदमार मेहरारु उपदर बो बाड़ी। उहो अपना मरद से बड़ भाई से अलगा होखे

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर आ छोट भाई के जान मारे खातिर ओसहीं डाँट के कहऽनारी जइसे लेडी मैकवेथ अपना मरद से राजा डंकन के जान मारे के कहऽनारी। दुनो के मरद ई काम से भागऽ तारन स आ दुनो डाँट-डपट के, लजवा के काम करा लेतारी स। जहवाँ शेक्सपियर में पोर्शिया अइसन विदमान नायिका बाड़ी उहवाँ भिखारी के 'ननद-भउजाई' के नायिका ननद विदमान बाड़ी। जइसे डेस्टेमोना अपना करिअठ बदसूरत मरद खातिर अतना बेइजती सह के भी जान-परान देले बाड़ी ओइसे निसइल के सेहरारू अतना लात-जूता खाके भी अपना पिअकड़ मरद के थिरी से नइखी हठत।

ई कहल जाला कि शेक्सपियर अपना हिरदेया के अपना 'सॉनेट' में खोललें बाड़न। ऊ परेमी रहन एह से अपना 'सॉनेट' में ऊ परेम आ अपना परेमी के बारे में लिखले बाड़न। भिखारिओ अपना हिरदेया के अपना भजन में छिनगी के धऽ देले बाड़न।

शेक्सपियर- बहुत घमंडी रहन; भिखारी अपना देस के चाल के मोताबिक नयल रहेलन। गोसाईं तुलसीदास जी भी आपन हीनताइए देखवले बानी। इहाँ तक कि महाकवि कालिदास भी 'रघुवंशम्' के सुरुए में लिखले बाड़न कि—

"क सूर्यप्रभवो वंश क चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥"

भिखारिओ कहेलन कि—

ना पाट पर पढ़नी भाई,
नाम बहुत दुर पहुँचल जाई॥
कहे भिखारी लिखलीं थोर,
विद्या से बानी कमजोर॥"

अब इचि शेक्सपियर के कहल सुनी—

"Not marble, nor the gilded monuments
Of princes, shall outlive this powerfull rhyme"

आखिर में हमरा इहे कहे के बा कि शेक्सपियर आ भिखारी में केहू केकरो से ना कम बा ना बेसी। दूनो जना आप-अपनी के बा लोग। जब तक सवँसार में साहित्य रही, कला रही तबे तक दुनो के नाँव उजागर रही।

सुनऽ फतिंगा

[मधुप एम. ए.]

सुनऽ फतिङ्गा!
मर जइब तुं
जर जइब तुं
नेह तोहार ई बड़ा अटल बा।
सुनऽ फतिङ्गा!
बहुत समय से फुदकत बाड़
आस लगवले
साध सजवले
अपना मन से झूम रहल बाड़ तुं।
बबुआ हो
संभरत नइखऽ
अपने में मदहोस बनल
उधिआइल आय रहल बाडऽ तुं।
बड़ुए बेग भरल
भावुकता में
बायस इहे कि—
सोच रहल बाड़ तुं
सहजे ई कुल कइल धइल बा।
जानत बानी
नेह, तोहार ई बड़ा अटल बा।
बाकि इचिको
कहाँ खियाल
बबुआ तोहरा
कि का ह बरत टेम्ही पर लाल लाल।
सोच समझ लऽ
बा रूप जवन दीया टेम्ही पर
लउकत सुन्दर
ई नोक-नोक—
दिवाना जनिहऽजे
जरत अंगोरे ह
बचब ना, जर जइब तु
सुनिलऽ एमे, बड़ा जलन बा।
जानत बानी
नेह, तोहार ई बड़ा अटल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

—:॥ भोजपुरी कहाउति ॥:—

[श्री परमेश्वरी लाल गुप्त एम. ए., आजमगढ़]

ए

१. एक ठे पूड़ी पर अन्हरन के नेवता
२. एक ठे बिटिया पछहत्तर ठे बर
३. एक ठे रखली अपने गोर
दूसरे अइली नहाय खोर।
४. ए कुकुर तू दुव्वर काहें
चार घरा के आवा जाहें।
५. एक लाख पूत सवा लाख नाती
सेकरे घरे दिया न बाती॥
६. एक बिटिया पर नौ दमाद।

ओ

१. ओरी कै पानी बड़ेरे जाय
बूड़े लौकी सिव उतराय
२. ओस चटले पियास ना बुझात।

क

१. कानी आँख में काजर देलों,
देख पिया मोर सोभत बाय।
सोभा मै जरो का मोरे सूझत बाय
२. कपड़ा न लत्ता चल बेटा कलकत्ता।
३. कुर्मी कोइरी खेती करै, अउर लोग बरियारी करैं
४ कुल चिरइन में गड़गुचरि।
५. कूटैं पीसे जीरा, माँड़ पसावैं धनसीरा।
६ काल्है बनिया आजै सेठ।
७ कतकड़ बुढ़िया, रहँटा के चमरख।
८ कुटनी न पिसनी धिया ओठ बिदोरनी।
९ कहीं बेटी के सुनाई पतोह के।
१० काम पियार चाम नाहीं
११ कोइला के दलाली में हाथों करिया मुहो करिया।
१२ काठे कै ननद बिरावैले,
मुअलो सौत संतावैले।
१३ कब मरलीं सास कब आइल आँस।
१४ काम परले पर गदहवो के दादा कहल जाला।
१५ कउआ कान लेहले जात बाय,
ओहू के पाछे दउर पड़ेलैं।
१६ कोने कै बिस्तुइया बड़ेरी पकड़ै।
१७ कि सुतही न जाए कि भतरे खाय॥
१८ काठे क भगाती भकरा कै अच्छत।
१९ कहे कबीर सुना भाई रछा।
नान्ह जात लतिअवलै अच्छा॥
२० कातत-कातत आँख में होय गल फोरा
न पूत के करघान न भतार के डोरा।
२१ कूट करे भरभूज के लड़िका
२२ कहले से मनुआ खीर न खाय
पाछे से पनडोही चाटे।
२३ काठे के गाजी मियां पोरा के गलइचा।
२४ कौवा ले कवेलवा चतुर।
२५ कहावे के रानी चोरावे के चमरख।
२६ कौवा कान लेहले जाए।

ख

१ खाये के पर रहा, मार के टर रहा।
२ खेवा दे बहल जाय।
३ खिसिआइल बिलाई बइर कष्ट से सरों करै।
४ खाय के ठेकान ना नहाय के तड़के।
५ खंसी के चमड़ा पर कुकुर के माँस बिकाले।
६ खंसी के जान जाए खबैया के सवादे ना।
७ खिवाआवल कुकुर कटहा होले।

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ सारन जिला ॥:—

[सूर्यदेव]

सारन जिला तिरहुत कमिश्नरी का पछिम भाग में २४ ३६' आ २६ ३६' उत्तरी अक्षांश तथा ८३ ५४' आ ८ १२' पूरबीय देशान्तर का बीचे बा। एकर सदर आफिस छपरा में बा।

ई जिला लगभग तिनकोन बा। गंगा, सरजुग आ गंडक ई तीन नदी एकरा के घेरले बा। एह से एकर सीवाना बदलत रहेला एह जिला के क्षेत्रफल २६८३ वर्ग मील बा। एह जिला के जमीन नदी के बहाव से बनल बा। एकरा भीतर कई गो नदी बाड़ीसन, बरसात में नदियन में बाढ़ आ गइला से नीकचा पास के जमीन डूँब जाला। सारन जिला के सबसे ऊँच जमीन कुचायकोट समुद्र तल से २२२ फीट ऊंचा पर बा। जिला का अन्दर एको पहाड़ नइखे। सगरे सपाटे जमीन बा। कईगों बड़का चँवर बा जवना में धान होला। सारन जिला में गंगा, सरजुग, गंडक, झरही, खनवां, दाहा; गंडकी, धने, गगरी आ खटसा नदी बाड़ी सन।

सारन जिला के हवा पानी सूखा आ गरम ह। उत्तर बिहार में सबसे अच्छा एही जिला के पानी ह्वे एह जिला के तापमान करीब १००० रहेला। वर्षा साल में करीब ४५ इंच होला। एहीजा के जानवर अच्छा ना होले सन दोसरे जगह से मँगावे के पड़े लेसन। एही से एह जिला में कईगो जानवरन के मेला लागेला कातिक में सोनपुर में हिन्दुस्तान में सबसे बड़हन मेला लागेला एही महीना में दरौली आ रिवीलगंज में भी मेला लागेला। फागुन में सिल्हौरी आमहनार आ चइत में धावे आ कुआर आ बइसाख में सुकुलवा में मेला लागेला, जवना में खूब जानवर बिकाले किनाले सन। जंगल ना रहला से जंगली जानवर भी ना पावल जाले सन।

कुछ लोग 'सारंगारण्य' शब्द से, जवना के अरथ हिरण के बन होला, सारन शब्द के जनम बतावेला लोग। एकरा इतिहास के कुछ पता वेद से लागेला वोही में लिखला बा जे आर्य लोग पंजाब से पूरब मुहे चललन। आ आके सरस्वती नदी का किनारे बसलन। उहवाँ से चलल लोगन गंडक का किनारे आ बसल। वोही में से कुछ लोग दरभंगा में चल गइल आ वोही जा एगो बरिआर राजकायम कइल लोग। एकरा पहिले ऐहीजा चेरो लोग रहत रहल हा जे हार के भाग गइल जेकर खंडहर अबो मिलेला। सातवाँ सदी में चीनी यात्री यवनच्वाङ् घूमत-घूमत ए जिला में पहुँचल रहे। सारन जिला के सबसे पुरान स्मृति चिन्ह छपरा से ३४ मील उत्तर पुरूब दिघवादुबौली में ताँमा के पत्र मिलल बा। ई बनारस के राजा महेन्द्र पाल के दिहल हवे एही में ऊ पनियाक गाँव दान में देहले रहले। १६२५, ई० में मशरख थाना में डुमरे नाम के गाँव में दूगो सोना के सिक्का मिलल जवना में एक ओर 'श्रीमद् गंगवेदेव' लिखल बा आ दोसरा ओर कवनो देवी के मूरत बनल बा। १६१८, १६ ई० में बेलवा में खुदाई के काम भइल जवना में छठी सदी के दूगो मन्दिर आ कुछ मूरत मिलल। खोदाई करावे वाला श्रीयुत पान्डेय के मत बा कि ई चीनी आक्रमण कर्ता वाँ ह्यूनचे के नष्ट कइल मन्दिर ह। १५२६ ई० में बाबर सारन जिला पर चढ़ाई कइले। वोही में उनकर जीत हो गइल। ऊ एह लड़ाई के बड़ा नीमन बखान कइले बाड़े। एपर देश

www.bhojpurisahityangan.com

के योद्धा लोग के बड़ा बड़ाई कइले बाड़े। बोकरा बाद ऊ गुंडनहे नाम के स्थान पर जाके ठहर ले शायद उहे ए घरी गुठनी कहाता। सारन शाह-मुहम्मद के सँउप के बाबर अवध का ओर चल गइले। फेर अकबर बादशाह भइला पर एकरा के अपना राज में मिला लेहले। १५८२ ई० में अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल एहीजा के लगान तय कइले। १६६६ ई० में चौपर 'छपरा' नामक शहर में हालैण्ड कम्पनी शोरा के एगो गोदाम कायम कइले रहे। इहाँ शोरा साफ होखे आ हुगली भेज दीहल जाय उहा से विदेश चल जाय। बोकरा बाद अंगरेजो लोग आके शोरा के कारखाना खोलल। १७११ ई० में कुछ लुटेरा छपरा के लूट लेहले सन आ कारखानन में आग लगा देहले सन। अंगरेज सबसे पहिले एह जिला पर १७५७ ई० में धावा कइले सन। दूसर का बेर १७६३ ई० में ओकर सेना इहा आइल। नवाब मीर कासिम के सेनापति समरू ओ लोग के माँझी में हरा के गिरफ्तार कइले आ ऊ सब मार दिहल गइल लोग। १७६४ ई० में इहो जिला अंग्रेजन का हाथ में आ गइल। माँझी में एकबेर फेर सिपाहियन के बलवा भइल पर हार गइले सन आ तोप का मुँह पर २८ जना मुखिया उड़ा दिहल गइल लोग। १७६६ ई० में लार्ड क्लाइव छपरा अइले। येहीजा क्लाइव अवध के नवाब शूजाउद्दौला आ बादशाह शाहआलम के वजीर मुनी-रुद्दौला आ बनारस के राजा बलवन्त सिंह आपस में मिलल लोग आ ओ लोग में सुलह भइल। वोही घरी हथुआ महाराज के पूर्वज हुसैपुर के महाराज फतेह-साही विद्रोह कइले। जवना के दबावे वास्ते अंग्रेज लोग सेना भेजल जवन बड़ा मुसकिल से उनका के राज से भागा सकल बाकी ऊ आपन धावा ना छोड़ले उनकर राज गोविन्द राय के दिया गइल बाकी उहो एक दिन लड़ाई में मरा गइले। तब तंग आके सरकार फतेह साही के राज दिहलस बाकी उनका सान्ति से राज ना करे के रहे उपद्रव शुरु कइले आखिरी दिन में सन्यासी हो गइले। उनकर वंशज ए घरी तमकुही के जमीन्दार बा लोग जवन गोरखपुर राज में बा। हथुवा बसन्त साही का पोता के दिया गइल।

एकरा बाद १८५७ ई० के एहीजा के सीराज के लड़ाई प्रसिद्ध बा वो घरी सुर्गौली के मेजर होम्स आ दोसरा अफसरन के मार दिहल लोग। छपरा के अंगरेज भाग के दानापुर चल गइल लोग वो घरी विद्रोह दबावे खातिर सीवान में खास तौर से गोरखा सिपाही रखाइल रहलेसन। पहिलका महायुद्ध में ५,५०० आदमी एह जिला के लड़ाई में शरीक भइल रहले। १९४२ में भी इहाँ बड़ा विद्रोह भइल भडौड़ा में कई गो अंग्रेजन के लाश ले गायब कर दिहल लोग जवना के कवनो पता ना लागल। एहु घरी हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद एही जिला के रह-निहार हवी। उहाँ का अवहीन ले एहीजा का लोग से भोजपुरीए में बोलीले। एक बेर मजाक में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी कहले रहनी जे हिन्दुस्तान के राष्ट्रभाषा भोजपुरी हवे काहे कि इहाँ के राष्ट्रपति के भाषा भोजपुरी ह। जयप्रकास नरायन पर भी हमनी का कम गर्व नइखे जे १९४२ में अंग्रेज सरकार के तख्ता हिला दिहले उहाँ के नाम के नइखे जानत उहों का एही जिला के रहनीहार हवीं। एघरी उहाँ का विनोबा जी का संगे गरीबन खातीर जमीन माँगत फिरत बानी।

इहाँ के मुख्य बोली भोजपुरी आ लिपी कैथी हवे।

www.bhojpurisahityangan.com

॥ खेती के कहाउति ॥

'बरखा'

[रामगणेश पाण्डेय 'विशारद']

सावन पहिली पंचमी गरभ ऊगै जो भानु,
बरसा होगी अति घनी, ऊँचे जानो धान।
गरभै उगे का भयो, जो गरज्यो अधिरात,
तुम जैयो पिया मालवा, हम जै हैं गुजरात।
चढ़ते बरसै आदरा, उतरत बरसै हस्त,
कितनौ राजा डाँड़ ले, सुखी रहै गिरहस्त।
आवत आदरना दियो, जात न दीन्हें हस्त,
बीचे माघा ना दियो त का करीहें गिरहस्त।
इन्द्र-धनुष जो पूरब देखी, नीच ऊँच थल एकै लेखी,
साँझै धनुष बिहाने पानी, कहै घाघ सुन पंडित ज्ञानी।
सावन पहिली चौथ में जो मेघा बरसाय,
तो भाखै यों भड्डरी, साख सवाई जाय।
सावन सुकला सत्तिमी, छिपि के ऊगै भानु,
तब लगि देव बरीसि हैं, जब लगि देव-उठानु।
सावन-बदी एकादशी बादर ऊगै सूर,
तो बतरावै भड्डरी, घर-घर बाजै तूर।
सावन-मास बहै पुरवाई, बरधा बेंचि लिहा धेनुगाई।
ढेले पर जब चील्ह बोलै, गली-गली में पानी डोलै।
सुदि असाढ़ की पंचमी गज धमधम्मा होय,
तो यों जानो भड्डरी, मधुरा मेघा जोय।
सुकवार की बादरी, रहे सनिचर छाय,
कहे घाघ सुनी घाघनी, बिन बरसे नहिं जाय।
असाढ़-मास पुनो दिवस बादर घेरै चंद,
तो भड्डरी जोसी, कहै होवे परमानन्द।
उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै, बरसा होय भूमि जल बढ़ै।
पूस अँधेरी सत्तिमी, भिन-भिन बादर होय,
सावन-सुदि-पुनवासी बरसा अच्छी होय।
मृगसिर वायु न बादरी, रोहिन तपै न जेठ,
आद्रा जो बरसै नहीं, सहै कौन अलसेठ।
जेठ अंत तिथि रात में रहै मेघ जो छाय,
कहै घाघ तेहि साल में जल दे भूमि बहाय।
उत्तर चमकै बीजरी, पूरब बहै जु वाउ,
घाघ कहै सुनु भड्डरी, बरधा भीतर लाउ।
धनि वह राजा धनि वह देश, जहवाँ बरसै अगहन सेस
कलसै पानी हो गरम, चिड़ी नहावै धूर,
अंडा ले चिऊँटी चढ़ै, बो शरखा भरपूर।
पानी बरसै आधा पूस, आधा गेहूँ आधा भूस।

---

* भोजपुर के दँत कथा *

[पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह]

एगो राजा रहले। उनका रानी के एगो दामो हार गायब हो गैल। महल के कोना-कोना ढुँढ़ा गैल बाकिर पता ना चलल। राजभर के नीमन-नीमन जोतिसी लोग के बोलाहट भेल आ कहल गैल कि जोतिस से गनना क के बताईं सभे कि हार मिली कि ना आ मिली त कब आ कहाँ मिली। पारा-पारी सब जोतिसी लोग बतावल बाकिर हार ना मीलल। ओह लोग के राजा जेहल दे दिहले।

www.bhojpurisahityangan.com

ओही घरी एक ठो धोबी के गदहा भुला गैल रहे। ऊ अपना पड़ोस के एगो बाबाजी से कहलस कि रउरा ब्राह्मण-पंडित हउईं; गीन के बताईं त कि हमार गदहवा कहाँ बा। बाबाजी त लिख लोढ़ा पढ़ पत्थल रहले। बाकिर डींग हँकले कि बिहान हम जरूर बता देब। रात भर जेने-तेने घूम के ओ धोबिया के गदहवा खोजले। देखले कि नरकट का बन में एगो गदहा चरत बा। दोसरा दिन भोरहीं धोबिआ पहुँचल। झूठो-मूठो अँगुरी पर गिन के कह देले कि नरकट का बन में गदहा चरत बा। धोबिया का गदहवा मिल गइल। बाबाजी के बड़ा नाम हो गइल। सभे कहे लागल कि बाबाजी बड़ा भारी जोतिसी बारे।

राजा के कान में भी एह बात के भनक मिलल। बाबाजी बोलावल गइले। उनका से राजा कहले कि जइसे रउरा धोबिआ के गदहवा के पता लगा देनी हँ ओसहीं जोतिस से गिन के हमरा रानी के हार के पता बता दीं, नाहीं त रउरा के भकसी भोंकवा देब। बाबाजी त काँप गैले। ऊ कुछ जानत त रहबे ना कैले बाकिर करस त का करस। कहले कि हम बिहान बताएब।

बाबाजी के खूब खातिर से महल में रखल गइल नीमन भोजन मिलल आ रात में पलंग पर सुते के मिलल। सातो जनम में ओइसन खाए के आ पलंग उनका नसीब ना भइल रहे। बाकिर ना त फिकिर का मारे उनका से भर पेट खाइल गैल ना रात के ओह पलंग पर उनका नीन्द परल। रात भर करवट बदलत रह गैले। आधा रात का बाद उनका अइसन बेचैनी भइल कि ऊ घिघिया-घिघिया के कहे लगले—"आव रे निनिया बिहान जान जाला।"

राजा कीहाँ निनियाँ नाम के एगो लउँड़ी रहे। असल में उहे हार चोरवले रहे। ऊ बुझलस कि बाबाजी अपना जोतिस का बल से जान गैल बारे कि हमहीं हार चोरवले बानी। बिहान राजा से कह दीहें त ठीके हमार जान जाई। बस तूरते जाके उनकर गोड़ धान लेलस आ हार उनका हवाले कइलस। बाबाजी बड़ा खुस भइले आ ठाट से सुतले।

भोर ही उठ के ओह हार के ऊ राजा के सिंहासन का नीचे लुका देले। कुछ दिन चढ़ला पर राजा के दरबार में उनकर बोलाहट भैल। ऊ हँसते उहाँ पहुँचलन। राजा पुछले—"कहीं जोतिसी जी, हार के पता लगवनी।"

बाबाजी कहले—सरकार हरवा त अपने का सिंहासने का आसपास होखे के चाहीं। गिनला से त अइसने उचरत बा। खोज सुरु हो गैल आ सिंहासन का नीचे से हार बरामद भैल।

बाबाजी के पूरा इनाम दे के राजा बिदा कइलन।

❀ संपादक के नाँवे चिट्ठी ❀

१२३ नार्थ एवेन्यू
नई दिल्ली

प्रियवर,

वन्दे। कृपा पत्र मिला। भोजपुरी नामक पत्रिका मुझे बराबर मिल रही है और तदर्थ मैं आप का बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। इधर मुझे अत्यन्त व्यस्त रहना पड़ा है। यहाँ हिन्दी भवन के लिए दो कमरे मैंने ले लिये हैं। अभी तक हिन्दी वालों के पास बैठने की भी कोई जगह नहीं थी और दिल्ली ४१ वर्ष से भारत की राजधानी है। उनका किराया १८१) महीने बैठता है तदर्थ चन्दा करना पड़ता है, जो मेरे लिए अत्यन्त ही कठिन है। आप स्वयं जानते हैं कि किन आर्थिक कठिनाइयों के मुकाबले यहाँ कोई यज्ञ किया जा सकता है। इसी कारण चिन्तित हूँ। सरकार से अभी कोई सहायता नहीं मिल पाई। जरा चित स्वस्थ होते ही भोजपुरी के बारे में कुछ जरूर लिखूँगा। आपकी लगन का मैं कायल हूं। आप दृढ़ता पूर्वक कार्य करते रहें।

—बनारसीदास

---

www.bhojpurisahityangan.com

संपादक भोजपुरी

लोक साहित्य अंक बहुत उपयोगी निकाला है। उसके कई लेख पठनीय हैं। सामग्री का चयन सुंदर हुआ है। आपका यह प्रयत्न प्रशंसनीय है।

अगरचंद नाहटा

संपादक, राजस्थान भारती, बीकानेर

आप द्वारा संपादित भोजपुरी पत्रिका की कई प्रतियाँ देखी। भोजपुरी की प्रतिष्ठा, प्रसरण और व्यापकता के संबंध में की गई आपकी सतत चेष्टा से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। उसके लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिये।

लालजी सिंह एम. ए. साहित्यरत्न
बासलीगंज, मिरजापुर।

भोजपुरी के लोक साहित्त अंक मिलल। साहित्त का खेआल से ई अंक बहुत सुंदर भइल बा। साल में कमसे कम एगो अइसन अंक जरूर निकले के चाहीं एह से भोजपुरी के तोपाइल साहित्त प्रकाश में आई।

केदारनाथ मिश्र आर. ई. एम. ओ.
नं०, ६०८१७ एन. ए.एस. कोचीन।

भोजपुरी के अंक मिलल रहे। मिलला के खबर भी भेज देले रहीं। बहुत गम्भिराह आ चुकमुकिया अंक निकलल बा। लोक साहित्त अंक त भोजपुरी भाखा के इंसाईक्लोपिडिया कहल जा सकेला।

'अशेष', संपादक लहर, गया

अभिनन्दन,

इन्तजार त ई भोजपुरी खुबियेनु करवलस, बाकी आइल तनी नीक; नाहीं त हमहुँ सपरल रहीं खुबिये ओरहन दिहतीं। काहे कि जतना लोगन के गाँहक बनवले रहलीं हाँ खुबिये हमरा के लंगों चंगों कइले रहल हा। सोचत रहीं कि सब हमही सहलीं काहे के रउआ काने जाय दीं। खैर, इज्जत बचवलस। भासा विज्ञान के विद्यार्थी लोग चिहा-चिहा के तिकवत रहे, कुछ लेखन का ओर जइसे भोजपुरी आ ओकर लोक साहित्य, भोजपुरी के लोक गीत, भोजपुरी के विस्तार आदि पान छव गो अइसन भोजपुरी के विस्तार आ विकास पर लेख रहस कि बड़ा चाव से पढ़ल गइल, काशी के हलका में। ई विशेषांकवा तनी अउर लोग खातिर गुरू गम्भीर बुझाई। हँ राधिका देवी के बिआह के गीत में संग्रहीत चीज जनता के मन जरूरीय घींचलस। कतना लोग देखलन, हँसलन, चिहइलन आ फिन अपना मनवा में ललकत उत्सुकतवा के तिरपित करे खातिर पढ़लन लोग भी।

'मधुप'

भोजपुरी पतिरिका से भोजपुरी भासा आ भोजपुर छेत्र के अकथनीय सेवा हो रहलि बा। एकरा के देखते पढ़े खातिर लोगन में खास करके लइकन में खींचा तानी होखे लागेला। मंत्रनि का संग्रह में रिसी लोग जवन काम कइले बा। उहे काम लोक साहित्त के बटोरे में रघुबंश बाबू एह पतिरिका द्वारा कर रहल बाड़न। एह से राष्ट्रभासा हिन्दी का भी नाया-नाया पारिभासिक सब्द, महावरा, कहाउति, काथा, कहनी मिली। भोजपुरी का बढ़ति से राष्ट्र-भासा के बढ़ती में भारी मदति मिली।

अध्यापक शिव प्रसाद सिंह, बैरिया, बलिया।

भोजपुरी पत्रिका से हमरा बड़ा सरधा भगति बा। आज से ना बहुत पहिले से। सीवान भोजपुरी सम्मेलन में भोजपुरी के बिकास देख के मन हुलस गइल।

खैर हम भोजपुरी पत्रिका के संरक्षक हो जाये के चाहत बानी। एह से हम एही हप्ता में १०१) रुपया अपने के नाम से भेज रहल बानी। रुपया बीमा चाहे मनीआडर से जाई। जरुर।

अध्यापक श्यामानन्द सिंह, रामपुर नूर नगर
बेसिक स्कूल, सारन।

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ रनवीर आज चल ॥:—

[शुकदेव प्रसाद सिंह]

रन वीर आज चल
तू वीर आज चल
काँट कुस लाँघ के
पहाड़ फान के
कदम बढ़ा के चल
रनवीर आज चल।
पानी के जार के
पत्थर क फार के
आन्हीं के उठा के
तूफान तान के
निरभेद भाव चल
रन वीर आज चल।
तू वीर आज चल।

चल जाये जान
हील उठे जहानू
साहस बटोर के
भयभूत झार के
तू एक राह चल
रन वीर आज चल।
जन-जन के तन में
जन-जन के मन में
बिजुरी चमका के
लहर लहरा के
विघिन उड़ा के चल
रण वीर आज चल।

❀❀❀❀❀❀❀

॥ भोजपुरी में कठिनाई ॥

भोजपुरी भासा जन भासा के रूप में लेल गइल बा आ अइसन जतन कइल जात बा कि ई सभ के समुझे लायक होखो, बाकी खास जगहन के खास-खास सब्द दोसरा जगह के लोग के बुझात नइखे। एह से एकरा में भी थोड़े कठिनाई आ जात बा। ई त भोजपुरी लोग के बात भइल। जे भोजपुरी इलाका के बाहर बा ओकरा ढेर सब्द नइखन स बुझात। एह से श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन आ डाक्टर धीरेन्द्र वर्म्मा के कहनाम बा कि अइसन सब्दन के अर्थ खड़ी हिन्दी में देल जाव। लेखक लोग का चाहीं कि अपना लेख के बिहः सब्दन के अरथ लेख का नीचे दे देस। मगर अबहीं तक अइसन होत नइखे। एह से कुछ सब्द इहाँ देल जात बा जवना के अरथ भी दिआता। पाठक लोग एकरा पर बिचार करस, अरथ का बारे में सुझाव देस आ सब्द खोज के भेजस त बड़ा काम होई।

अइँठ = बांकपन, ऐंठ, सन, सुतरी आदि को अइँठ और बर कर रस्सी बनायी जाती है।
अइँठन = रस्सी ऐंठने पर जो तनाव आता है।
अइँठल = ऐंठा हुआ
अइँजन = इन्जन

अइन = कानून, ठीक समय
अइनी = कानूनी
अइलीं = आया
अइलन = आए
अइसन = ऐसा

www.bhojpurisahityangan.com

अइँच = जिसकी एक आँख छोटी हो

अइँचा = किसी खास व्यक्ति को जिसकी आँख ऐसी हो को कहा जाता। जैसे अइँचा कहा था, अइँचा आया था।

अउँघी = नीन्द

अउँघल = नीन्द लगी हो

अउँघाइल = सोया हुआ

अउँदाइल = नीन्द से जगाया गया हो पर पूरी तरह नीन्द टूटी न हो।

अउचट-बउचट = बउराहा

अउँजाइल = झँझट में पड़कर घबड़ाना, सकफक में पड़ना, ऊब जाना।

अउँधल = उलटा हुआ

अउँधाइल = उलटा हुआ

अउँधा = उलटा, खराब चाल-चलन के लिए भी आता है, साँप

अउँराइल = बासी अन्न जिसका स्वाद खराब हो गया हो।

अउँसाइल = गर्मी में परेशानी

अकट-बकट = बेकार

अकच-बकच = उलजलुल

अकचकाइल = आश्चर्यचकित होना

अकंटक = बिना बाधा के

अकड़ = सख्त, कठोर

अकड़बाज = घमंडी

अकड़बाजी = घमंड

अकबक = अनाप-सनाप

अकलंक = बिना कलंक के

अकवन = एक प्रकार जा पौधा

अकरब = घोड़े का एक पय (दोष)

अँकरी = एक घास जो रब्बी फसल में होती है। उस में फल भी लगता है, सत्तू बनता है।

अँकुरी = जब बीज में अँकुर आ जाता है

अँकुरल = जब बीज से अँकुर निकल आता है।

अँकरे = गाय या भैंस जब पहली बार बच्चा देती है तो उसे अँकरे कहते हैं।

अँकवार = दोनों बाहुओं की पूरी पकड़ को अँकवार कहते हैं कहावत है–हर ना बैल अँकवार भर के पैना

अँकवारी = बाँहु पाश

अँकवार गहन या अँकवार भेंट = अलिंगन करना

अकसर = अकेला

अकरम = अकर्म

अकार = आकृति, मात्रा

अकारथ = व्यर्थ

अकाल = जब खाद्य पदार्थ की कमी होती है

अकास = आसमान

अकुलात = घबडाना,

अकुतात = जल्दी बाजी

अकुताइल = जल्दी में

अकुलाइल = व्याकुल

अकुलाहट = व्यग्रता, व्याकुलता

अकेल = एके, अकेला

अकेले = एके

अकेला = जब साथ में कोई न हो।

अखज = अदावत

अखड़ = अक्खड़, अपने उद्देश्य की पूर्ती पर डट जानेवाला, धूनी, धून का पक्का।

अखड़ल = किसी घटना या वस्तु की चिंता

अखाड़ा = कुस्ती लड़ने, कसरत करने की जगह

अखड़ेरे = बे मतलब के, व्यर्थ

अखतिआर = अधिकार

अखीर = अन्त

अखरे = बिना तेल नून के, सूखी रोटी के लिय आता है।

अखनो = अभी; अबही

www.bhojpurisahityangan.com

अखोर = कूड़ा कचरा

अँखुआ = बीज में जो आँख होती है जहाँ से अँकुर निकलता है।

अँखफोर = समझदार, जानकार

अखउत = चावल छाँटने अथवा धान कुटने की ढेंकी के बीच में एक धूरे की जैसी लकड़ी होती है, जो दोनों ओर के खूँटे के सूराख में लगा दी जाती है। उसीपर ढेंकी उठती गिरती है।

अँगइठी = शरीर का मरोड़, अँग अइँठना

अगवाह = संक्षिप्त मार्ग, अँग्रेजी के शॉर्ट कट के लिए आता है।

अगना = अँगना, आँगन में केवल उच्चारण का भेद है

अँगरना = अति शीत, जाड़ा में अँगों के ठिठुरने में जो शून्यता आती है। जख्म के एक प्रकार का दर्द।

अगसर = अकेला।

अगुती अगवासा, अगुआरी = सभी मकान के अग्र-भाग के प्रयाय हैं।

अगुआ = नेता, आगे-चलने वाला, विवाह ठीक करने जब आदमी जाता है तो अगुआ कहा जाता है।

अगुआन = वही नेता, किसी काम में आगे चलने वाला।

अगाड़ी = घोड़े के बाँधने वाली आगे की रस्सी, अग्रभाग, आगे।

अँगार = आग का वह भाग जो चारो ओर से जलकर लाल हो जाता है। अँगोरा उसका छोटा रूप है।

अगहन = हमारे देश का नवा महीना

अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा

['विकल' नयन कुमार सिंह, विद्यार्थी]

महल पुरान ढह गइल, गड़ल नया मचान बा;
अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा।
अनार के कली सुखल, ऊ डाढ़ पर फुला गइल;।
ढेसरा गइल रहे जवन अब ऊ तूरा गइल।
भुरा गइल रहे जे अब ओकरे चालान बा,
अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा।
अमीर भइल अब बलुक ई जीव के जवाल बा,
अब कहाँ गरीब आ अमीर के सवाल बा;
कमाल बा, अमीर से सुखी बलुक किसान बा;
अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा।
कहाँ गइल ऊ ठाट जे रहे सामंत काल में;
कहाँ मोटा गइल अकिल कमी भइल जे चाल में।
अब ना घर में धान बा ना चुटकी भर पिसान बा;
अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा।
जमीन के कमी न बा मगर कहाँ इमान बा;
एक पाव भर जमीन जीव बा जहान बा।
इहे कि भूमि दान-यज्ञ के हविस महान बा;
अमीर के मसान पर गरीब के निसान बा।

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ भोजपुरी के शुद्ध रूप ॥:—

[श्री जगदीशनारायण]

भोजपुरी पत्रिका के करीब सात आठ अंक देखला का बाद हमरा ई बात जरूरी बुझाइल कि एह बात पर विचार कइल जाय कि भोजपुरी भाषा के रूप का होखे के चाहीं। अइसे त भोजपुरी थोड़ बहुत बदलल रूप में बहुत दूर में फैलल बा और बोलल जाला लेकिन ओकर शुद्ध रूप का होखे के चाहीं जबले एह बात के फैसला नइखे हो जात तब तक हमनी के ओकरा के एगो अलग भाषा ना कह सकींजा और ना ओकर तरक्की कर सकींजा एह से ओकर आधार ठीक करना जरूरी बुझाता।

हमरा जाने में आरे जिला में भोजपुरी प्रधान रूप से बोलल जाला। भोजपुर एह बोली के खास जगह ह जवन आरे जिला के एगो परगना ह। खास आरा शहर में भी भोजपुरिये बोलल जाला। अइसे त दोसरो जिला जइसे छपरा, मोतीहारी पलामू, बलिया वगैरह में भी भोजपुरी थोड़ बहुत बदलल रूप में बोलल जाला। आरे जिला के चारो सब डिविजन में भी भोजपुरी के एके रूप नइखे लेकिन विचार ई करे के चाहीं कि कहाँ के भोजपुरी के शुद्ध भोजपुरी मान ले ल जाय।

हमरा ई कहे में त तनको हिचकिचाहट नइखे कि चूँके आरे जिला भोजपुरी के प्रधान जिला ह एह से एही जिला के भोजपुरी के शुद्ध भोजपुरी मान ले बे के चाहीं। बाकिर एह जिला में त भोजपुरी के एके रूप नइखे। एह से एहू जिला के कौन जगह के बोली के शुद्ध भोजपुरी मानल जाई। खास भोजपुर त एगो देहात ह एह से उहाँ के बोली के शुद्ध भोजपुरी के रूप देबे में बहुत सा कठिनाई बा। ओकर वजह इहे बा कि ऊ बहुत छोटा जगह भइला का बोजह से बाहरी दुनियाँ से बहुत कम सरोकार रख सकला। बाहरी दुनियाँ के लोग के उहाँ आना जाना भी बहुत कम बा जवना से उहाँ के दिहात के बोली के प्रचार करे में बहुत कठिनाई के सामना करे के पड़ी।

आरे भोजपुरी बोले वाला जगहन में प्रधान जगह ह। ई शहर, जिला के आऊर सब जगहन से जादे बाहरी दुनियाँ से सरोकार रखेला। बाहर के लोग के इहाँ आना-जाना आऊर रहना सब दिहातन से बेसी बा, एह बोजहन से इहाँ के बोली के जवन असल में भोजपुरीये ह, शुद्ध भोजपुरी मान के भोजपुरी के प्रचार करे में बहुत सुभीता होई। कौनो भाषा के रूप खड़ा करे का बेरा भी एही सब बात के खेयाल कइल जाला। खड़ी बोली दिल्ली का आसपास के दिहात के बोली ह। लेकिन खड़ी बोली के रूप देबे का बेरा ऊ दिहातन के बोली के रूप ना दे के दिल्ली शहर के बोली के शुद्ध खड़ी बोली के रूप दियाइल।

आज काल्ह जवन भोजपुर के दिहातन में बोलल जाला ओकरा के शुद्ध भोजपुरी ना समझे के चाहीं ऊ भोजपुरी के बिगड़ल रूप ह जवन दिन पर दिन बिगड़ले जाता। दिहात के जादे आदमियन के जाहिल रहला का बोजह से शुद्ध शब्द के बोले में कठिनाई होला एह से ऊ लोग ओह शब्द के रूप बिगाड़ के बोलेला। ऊ सब बिगड़ल शब्दन के हमनी का भोजपुरी के शब्द मान के भारी गलती करब जा। एह से हमरा समझ से भोजपुरी के तरक्की

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर ई जरूरी बा कि शब्दन के बिगड़ल रूप के ना बल्के शुद्ध रूप के प्रयोग कइल जाये के चाहीं और उर्दू, फारसी के शब्दन के भी, जवना के इस्तमाल हमनी इहाँ खूब जादे हो रहल बा, अपनावे के चाहीं।

नोटः—यह लेख से संपादक के भी विचार मिलत होखे ई कवनो जरूरी नइखे। ई एह खातिर छापल जात बा कि आउर लोग भी एह पर आपन विचार देव। भासा के प्रकृत रूप गाँवें में मिलेला। सहरी में बनावटीपन आ जाला। आज भासा विज्ञान के अध्ययन खातिर गाँवें में जाये के पड़ी। संपादक—

॥ हिन्दी के प्रकाशन-क्षेत्र में अभिनव आयोजन ॥

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की समस्त कृतियों का अनमोल संग्रह

बेनीपुरी-ग्रंथावली

दस खंडों में

पहला खंड प्रकाशित हो गया !

पृष्ठ संख्या—६२२ : चित्र संख्या १०७

मोनो की साफ-सुथरी छपाई : रेक्सिन की सुनहरी जिल्द तिरंगा नयनाभिराम आवरण !

इस खंड में बेनीपुरी जी की ये छः अनुपम कृतियाँ संकलित हैं—

१. माटी की मूरतें ४. गेहूँ और गुलाब
२ पतितों के देश में ५ लाल तारा
३ चिता के फूल ६ कैदी की पत्नी

सुन्दर चित्रों से आभूषित किये जाने के साथ ही इन पुस्तकों के पाठ और क्रम में भी मौलिक संशोधन किये गए हैं, जिस कारण इनके कलेवर ही बदल गये हैं !

मंगाकर देखिये

प्रति खंड का मूल्य—१२॥)

पूरी ग्रंथावली का अग्रिम मूल्य—१००)

बेनीपुरी-प्रकाशन, पटना ६

लेखनी या जादू की छड़ी !

यह लेखनी है, या जादू की छड़ी आपके हाथ में !

—मैथिलीशरण गुप्त

फौलाद उगलती है !

बेनीपुरी की लेखनी फौलाद उगलती है; हिलकर मनोजगत में भूकम्प करती है !

—माखनलाल चतुर्वेदी

सर्वश्रेष्ठ शब्द-चित्रकार !

यदि हम से प्रश्न किया जाय कि आजकल हिन्दी का सर्व श्रेष्ठ शब्द-चित्रकार कौन है, तो हम बिना किसी संकोच के बेनीपुरी का नाम उपस्थित कर देंगे।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

खंजन-सी फुदकती है !

बेनीपुरी की भाषा, चपल खंजन सी फुदकती चलती है !

—शिवपूजन सहाय

किसी भी भाषा में नहीं !

छोटे-छोटे वाक्यों में आप जो बात लिखने की क्षमता रखते हैं, वह हिन्दी में तो क्या, भारत की किसी भाषा में भी ढूढ़ने से उपलब्ध नहीं होगी।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

www.bhojpurisahityangan.com

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का परिचय

[श्री गोविन्द प्रसाद केजरीवाल]

हिंदी साहित्य के इतिहास में संवत् १९५० का एक विशेष महत्व है। इस वर्ष में दो महत्वपूर्ण कार्य हुए। एक तो काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना हुई, दूसरे हिंदी के मौलिक साहित्य का सर्जन बड़ी ही तीव्र गति से होने लगा। साहित्य निर्माण का कार्य तो भारतेंदु जी के समय से ही गतिशील हो चुका था किंतु हिंदी के प्रचार-कार्य में बहुत सी बाधाएँ थीं। अदालतों में उर्दू का प्रचलन होने के कारण समाज में उर्दू की शिक्षा का बोलबाला था। सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी के साथ उर्दू का ही महत्त्व था। ऐसे ही संक्रमण-काल में कई छात्रों के अदम्य उत्साह और उद्योग से, जिनमें स्व० बाबू श्यामसुंदरदास, स्व० पं० रामनारायण मिश्र, तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह मुख्य थे, सभा की स्थापना हुई। सभा को संवत् १९५० में १ रु० १५ आ० मात्र का मासिक चंदा सदस्यों से प्राप्त होता था। इसके प्रथम सभापति भारतेंदु जी के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्ण दास हुए तथा प्रधान मंत्री हुए बाबू श्यामसुंदर दास। सभा के सहायकों में भारतेंदु जी के मित्रों में से रायबहादुर प० लक्ष्मीशंकर मिश्र, ठा० रामदीन सिंह, बाबू रामकृष्ण वर्मा, बाबू गदाधर सिंह, बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री आदि थे। नगर के प्रतिष्ठित हिंदी-प्रेमी उस समय तक इस सभा को निरी बाल-सभा समझते थे और उसमें आते हुए संकोच करते थे। वे यह कहकर हँसते थे कि कहाँ इन बालकों की स्वल्प शक्ति एवं परिमित साधन और कहाँ सभा के महान् उदेश्य! फिर भी नागरी लिपि के प्रचार तथा हिंदी साहित्य के उन्नयन के उद्देश्य से सभा का कार्य आगे बढ़ा। स्मरण रखने की बात है कि आयरलैंड में भी श्री डी वेलरा ने मातृभाषा का आंदोलन संवत् १९५० में ही प्रारंभ किया था। संवत् १९५२ में उत्तर-प्रदेश के तत्कालीन छोटे लाट सर ऐंटनी मेकडानल जब काशी आए तब सभा की ओर से एक आवेदनपत्र उनकी सेवा में उपस्थित कर उनसे अदालतों में नागरी लिपि के प्रचलन का अनुरोध किया गया तथा इसके अभाव से उत्पन्न कठिनाइयों का दिग्दर्शन कराया गया। सर ऐंटनी मेकडानल ने सभा की माँग के महत्त्व को समझा और इसको पूरा करने का वचन दिया। इसके बाद सभा ने व्याख्यानों तथा परिपत्रों के प्रकाशन द्वारा जनता में नागरी लिपि के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का कार्य अपनाया। बहुत से स्थानों में सभा की ओर से शिष्टमंडलों को भेजने का आयोजन किया गया तथा विभिन्न नगरों में सभा की शाखाएँ भी स्थापित हुईं। संवत् १९५५ में एक विशिष्ट शिष्टमंडल फिर इस संबंध में लाट साहब से मिला। इस मंडल में कई नरेशों के अलावा महामना पं० मदन मोहन मालवीय तथा डाक्टर सुंदरलाल जैसे व्यक्ति भी थे। सभा द्वारा जनता से हजारों की संख्या में हस्ताक्षर कराकर भी लाट साहब के पास भेजे गये थे। इस कार्य के अग्रदूत महामना मालवीय जी थे उन्होंने 'अदालती लिपि और प्राइमरी शिक्षा' नाम की एक विस्तृत तथा अनुसंधानपूर्ण पुस्तक लिखी। इसका बहुत बड़ा प्रभाव सरकार पर पड़ा और संवत् १९५७ में कचहरियों में नागरी प्रवेश की प्रथम सरकारी घोषणा प्रकाशित हुई। इस सरकारी घोसणा से जनता में हर्ष छा गया तथा सभा की प्रसिद्धि ७ वर्ष के इस अल्पकाल में ही देशव्यापी हो गयी।

www.bhojpurisahityangan.com

सभा की स्थापना के केवल तीन वर्ष बाद ही नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक सभी प्रकार के अनुसंधानपूर्ण लेख रहते थे। हिंदी के निर्माण में इस प्रकाशन द्वारा बड़ी सहायता आरंभ से ही मिलती चली आ रही है। सभा ने आगे चलकर हिंदी पुस्तकों की खोज का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया। इस प्रयास से अनेक अमूल्य तथा नष्टप्राय ग्रंथों का पता चला, जिनसे हिंदी की श्रीवृद्धि हुई। बाद में तो सं० १९५६ में सरकारी सहायता भी इस अनुसंधान कार्य के लिये सभा को प्राप्त हुई। ज्यों ज्यों सरकारी सहायता में वृद्धि होती गई, अनुसंधान का कार्य अधिकाधिक तीव्र गति से बढ़ता रहा। सभा के इस अनुसंधान-कार्य ने बाद में स्व० पं० रामचंद्र शुक्ल को 'हिंदी साहित्य का इतिहास' लिखने में बड़ी सहायता पहुँचाई।

सभा ने 'छत्र प्रकाश', 'जंगनामा' 'पृथ्वीराज रासो', 'परमाल रासो', 'ढोला मारू रा दूहा', 'बीसलदेव रासो' आदि ऐतिहासिक काव्यों को प्रकाश में लाकर हिंदी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की। इसके अतिरिक्त सभा ने तुलसी, सूर, जायसी, भूषण, देव, भारतेंदु ऐसे प्रसिद्ध कवियों की कृतियों के भी प्रामाणिक तथा सस्ते संस्करणों का प्रकाशन किया। संवत् १९६३ में अनेक विद्वानों के सहयोग से "वैज्ञानिक कोष" का प्रकाशन भी हुआ। सभा के विशिष्ट तथा चिरस्थायी प्रकाशनों में हिंदी का प्रामाणिक व्याकरण, हिंदी शब्दसागर, तथा हिंदी साहित्य का इतिहास है। "हिंदी शब्दसागर" का निर्माण २२ वर्षों के अथक परिश्रम के बाद पूर्ण हुआ। इसकी पृष्ठ-संख्या ४३०० है।

सभा ने आचार्य पं० चंद्रबली जी पांडेय के अनुसंधानपूर्ण हिंदी, उर्दू, और हिंदुस्तानी के साहित्य को प्रकाशित कर हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने का जो भगीरथ प्रयत्न किया, वह सर्वथा सराहनीय है। समय आने पर हजारों रुपयों के ग्रंथों का निःशुल्क वितरण भी सभा की ओर से किया गया था। इस तरह हिंदी के आंदोलन को सफल बनाने का बहुत बड़ा श्रेय सभा को है।

हिंदी की महत्त्वपूर्ण सेवा करनेवाला अखिल भारतीय 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' 'नागरीप्रचारिणी सभा' से कोई भिन्न संस्था नहीं है। वह नागरी प्रचारिणी सभा का ही यशस्वी पुत्र है। इसका प्रथम अधिवेशन सभा के प्रांगण में ही स्व० बाबू श्याम सुंदरदास के प्रयत्नों से हुआ था। बाद में हिंदी की श्रीवृद्धि के विचार से इसे प्रयाग में स्थापित कर दिया गया।

सभा के पूर्व अधिकारियों में सर्वश्री राधाकृष्ण दास, सुधाकर द्विवेदी, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, श्यामविहारी मिश्र, श्यामसुंदरदास, महावीर प्रसाद द्विवेदी, काशी प्रसाद जायसवाल, रामचंद्र शुक्ल, संपूर्णानंद, मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य नरेंद्रदेव, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, कृष्णदेव प्रसाद गौड़, बलदेव उपाध्याय आदि प्रसिद्ध विद्वानों के नाम मुख्य हैं। इसके वर्तमान सभापति डा० अमरनाथ झा हैं, उपसभापति-द्वय हैं सर्वश्री पं० गुरुसेवक उपाध्याय एवं डा० शिवकुमार सिंह (संस्थापक) तथा प्रधान मंत्री हैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय के भारतीय महाविद्यालय (कालेज आफ इंडोलोजी) के अध्यक्ष डा० राजबली पांडेय। वर्तमान प्रबंध समिति के सदस्यों में डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, आचार्य नरेंद्रदेव, डा० धीरेंद्र वर्मा, आचार्य चंद्रबली पांडेय, श्री नंददुलारे वाजपेयी, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री श्रीप्रकाश, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री मुरारिलाल केडिया (अर्थ मंत्री), श्री शिवपूजन सहाय, श्री डा० मोतीचंद, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, पं० करुणापति त्रिपाठी (प्रचार मंत्री), श्री कृष्णानंद

www.bhojpurisahityangan.com

(प्रकाशन मंत्री), डा० श्री कृष्णलाल (साहित्य मंत्री) जैसे सज्जनों के नाम मुख्य रूप से लिये जा सकते हैं।

आर्यभाषा पुस्तकालयः— सभा का एक विशाल पुस्तकालय है। देश के कोने-कोने से अनुशीलन के लिये यहाँ प्रतिवर्ष छात्र आते हैं। हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों तथा भारतेंदुकालीन पत्रिकाओं का जितना अच्छा संग्रह आर्यभाषा पुस्तकालय में है, उतना संसार में अन्यत्र दुर्लभ है। हिंदी के प्रायः सभी डाक्टरगण आर्यभाषा पुस्तकालय के ऋणी हैं। अभी भी इसके विस्तार की योजना विचाराधीन है।

नागरी मुद्रणः— सभा का अपना एक सुव्यवस्थित मुद्रणालय है। इसे सभा के कार्यों के अनुरूप ही विशाल तथा सुसंपन्न बनाने का प्रयास बराबर किया जा रहा है।

संकेतलिपि विद्यालयः— सभा ने उक्त विद्यालय की स्थापना कर हिंदी में संकेतलिपि की शिक्षा सुगम कर दी है। प्रतिवर्ष सैकड़ों छात्र इससे लाभ उठा रहे हैं।

पुरस्कार और पदकः— विभिन्न विषयों के उच्च कोटि के ग्रंथों के सर्जन और प्रकाशन को उत्साहित करने के उद्देश्य से ग्रंथकर्ताओं को सभा पुरस्कार और पदक अर्पित करती है। उक्त पुरस्कार और पदक के विजेताओं में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद, डा० हजारी प्रसाद, श्री वृंदा लाल वर्मा, श्री अज्ञेय, पं० कमलापति त्रिपाठी आदि विद्वानों के नाम मुख्य हैं।

सत्यज्ञान निकेतनः— ज्वालापुर में परिव्राजक स्वामी सत्यदेव प्रदत्त सत्यज्ञान निकेतन पश्चिम भारत के लिये सभा का प्रचार-केंद्र है। इसकी व्यवस्था सभा की पश्चिम-भारत हिंदी-प्रचार-उपसमिति के परामर्शानुसार की जाती है।

सभा नागरी तथा हिंदी के अधिकार, उत्थान एवं विकास के लिये सतत संघर्ष और प्रयत्न करनेवाली एक मात्र प्राचीनतम संस्था है। मूर्द्धन्य साहित्यिकों और राष्ट्रसेवियों की साधना से पुनीत और परिपुष्ट हुई भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति की सेवा में यह कृतसंकल्प तथा संलग्न है।

इसी काशी नागरीप्रचारिणी सभा की हीरक-जयंती आगामी वसंत-पंचमी (संवत् २०१० के शुभ अवसर पर मनाने का आयोजन हुआ है।

सभा की हीरक-जयंती ऐसे संक्रांतिकाल में मनाई जा रही है जब कि हिंदी-प्रेमियों को सम्पूर्ण राष्ट्र की साहित्यिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए हिंदी भाषा के माध्यम से राष्ट्र के नव-निर्माण का प्रारंभ करना है।

सभी योजनाओं की पूर्ति तथा सभा के समुचित विकास के लिए इस समय कम से कम पाँच लाख रुपयों की अपेक्षा है। यह साधन जनता तथा हमारी राष्ट्रीय सरकारों के सहयोग एवं शुभ कामना से ही सुलभ हो सकता है।

गीतांजलि (भावानुवाद)

[कवीन्द्र रवीन्द्र]

इहाँ चुनावल चरन-चउतरा, चरन उहाँ बा राउर,
दीन दलिद्दर हीन हेराइल बास करस जे ठाउर।
लागीला जब गोड़, हाँथ ना पहुँचे ओतना नीचे,
दीन दलिद्दर हीन हेराइल जहाँ आदमी राउर।
कबहूँ पहुँच धमण्ड ना सके, जहाँ रमीला रउरा—
दीन दलिद्दर हीन हेराइल के भेसे भिनकाउर।
कवन राह हम आईं, उहँवा बे सथियन के साथे,
दीन दलिद्दर हीन हेराइल में बसेड़ बा राउर!

www.bhojpurisahityangan.com

॥ मिसिरजी के चिट्ठी ॥

[श्री उदित मिश्र]

बबुआ रघुवंश नारायण के उदित मिसिर कऽ असीस बहुत तरह से पहुँचे। आप कऽ चिट्ठी आइल रहलि। एक नाहीं दुइठे। हिन्दुन कऽ बूढ़ बाउर होलेन, का जानी कहाँ रख दिहे, अब मिलत नाहीं बा। माँफी माँगत हईं। जे जतनै आपन होला बोतनै ओकरे ओरी से परवाह कम होय जाला। आप तऽ हमरे घरे कऽ प्रानी होय गयल हउअऽ। एही से चिट्ठी कऽ जवाब देबै कऽ चिंता नाहीं रहल। भैया, दोस्तन कऽ हिसाब दिल में रहऽला-कितनौ देर होय जाय-कितनौ दूर आप रहा तब्बौ दिलवा से दूर कैसे होवऽ। रोज एक दाईं ध्यान आवत रहल है कि आज चिट्ठी कऽ जवाब देईं—काल देईं इहै सोचत-सोचत ई हाल हो गयल कि दुई महीना कऽ दिन गायब होय गयल।

एक बात इहौ-हौ कि देखीं आपके जवाब देर में गइले से क्रोध आवला कि नाहीं तबन बात नाहीं बाय, आप तऽ समुद्र मतिन गंभीर बाय।

आप पोस कटवा में लिखले रहलऽ कि हम जल्दी आइब—चार पाँच दिन रहब। इ बतावऽ, तोहै कहाँ फुरसत बा। बापरे बाप इतना काम आप कै रहल बाये कि हम देखि के हद मान रहल बाई। आप कऽ चिट्ठी आज में देखले रहे—एक ठे लेखो पढ़ले रहे-कौनो चिट्ठिया के बारे में किछु लिखलौ रहलेन हम त नाहीं पढ़े। आप तऽ एक दम भोजपुरी बदे फिफिहर होई रहल बायऽ। मंत्रिन के कान होय तब नऽ। बिहार कऽ मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश कऽ मुख्य मंत्री-दूनौं बूढ़ हउयेन दूनो जने कऽ बुद्धि सठियाय गइल हौ। लेकिन एक बात हौ कि ऐसै आप लगल रहबऽ त जरूर कान खुली-ओन के बदे एक दवा आउर हौ-ओन से जब भेंट होय तब-तब इहे बात करै—ओन के नाक में दम कै दे तब काम चली। घरे के लड़िकन के, मेहरारून के सब ले कहै कि प्रधान मंत्री अपने घर के बोली कऽ आदर न कई के बहरे कऽ बोली बहुत बोल लेन।

आप तऽ भोजपुरी बदे योग रमाय रहल बायऽ आप कऽ जोड़ केव नाहीं बाय बनै के जे चाहै बनै; देखत हईं कि आप त भोजपुरी बदे मिशनन की नाईं काम करत बाय भगवान आप कऽ उमिर बहुत बढ़ावैं।

लोग रोवत हउएन कि हमार लड़िकवा अँगरेजी पढ़ि के खराब होय गयल। अपुने से त सब खराब कइले हौ—जे के आपन धर, आपन बोली, आपन चाल-ढाल, आपन, तौर-तरीका नाहीं पसंद बा—आपन मेहरारू आपन लड़िका जे न चीन्ही तेकर अइसने दसा होई। आन कऽ जनमल कहले से त इहै हाल होला। लड़िकन के अपनी भाषा कऽ अभिमान कराय देबै के चाहीं नाहीं त ओन्हने कऽ उहे हाल होई जबन आप लिखले रहल कि बापे से बोझ ढोलवइहैं।

हमार बाबू कविता करत रहलेन ओनकर एक सवैया आप कऽ इहाँ लिखत हईं—सुना—

घरी दुइ रात भिनसहरा क जुनि रहल,
सोना आने गए बिसुनाथ के नगर में।
गंगा जी नहाये चिल्लू चार एक पानी पाये,
रोटी जा के खाए अपने मामाजू के घर में।
किछु देर सोये जागे किछु देर रमायन कहे,
सोना जाके ले लिहे अठारह के दर में।
ताला लिहे-कुंजी लिहे चौकवा में देखी लिहे,
तीन पहर बीति गयल हम के डहर में।

वह समय १८) में एक भर सोना मिलत रहल।

www.bhojpurisahityangan.com

रघुवंश बाबू हमार सब कर जीवन बनावटी होय गयल-कुल काम में बनावट हौ–दाना मुरई खाए में लाज लगला–बिस्कुट चाय पीये में बहादुरी लोग समुझेलनऽ। सिगरेट कऽ धुआँ छोड़े में आप से कहत हईं कि आज काल कऽ लड़कन के स्वर्ग सुझाला। साँच पूछा त आज काल के हाल बड़ा खराब बा। भगवाँनि जौन करें बहै होई।

आप कऽ बोली बड़ी मीठ लगला-बैसन न हमरे लिखे आवे न बोले। हम तऽ बनारसी हईं। बनारसी लोग बड़ा अक्खड़ होलेन। आप लोग बबुआ लोग हउअऽ नरमी मिठास आप लोगन में बहुत हौ।

देखा राजेन्द्र बाबू की नाहीं केव बाय-सब चाहे हउएन राजेन्द्र बाबू राजा की नाईं सब काम करलेन

आप कऽ भोजपुरी के अंक बड़ा बढ़िया निकलल बाय–बैल गाड़ी हाँकै के आपके परल बाय। लोग तऽ हवाई जहाज पर उड़त बाये न। आप एक ठे चिट्ठी हमरे पता से ठा० दुक्खी सिंह, मोटर मालिक के नाम से लिख दी है और ओमन ई लिखऽ कि तोहरे कहले से दुक्खी सिंह के भोजपुरी पत्रिका भेजल करब ओकर दाम ५) भेजवाय दऽ।

का कहीं हमें बड़ा झंझट हौ। अब हरी यादना आवत हौ। हम आपन किताब 'देहाती दुनिया' आपके पास भेजब ओके पढ़ले से आपके मालुम होई कि हमरे पर का बीतत हौ।

एक दाईं आव जरुर-आवा बातै बात जिन रक्खा। देखा बड़े आदमी कऽ लड़िका हौवऽ जवन कह करा।

आप के देखले से हमार करेजा ठंढा होय जाई। आपऐसन सुंदर काम करत बाय कि सोच-सोच के हम गदगद होय जाइला। दूसर केव नाहीं दिखात बाय कि इतना जीवट और लगन से काम करै।

एहर बहुत दिन भयल ठाकुर प्रसाद से भेंट नाहीं भइल। एक दिन देखा-देखी नमस्कार-प्रणाम भयल रहल। ओनहु बहुधंधी आदमी हउएन। हम त उनके घरे जाइला तऽ पेंड़ा खूब खिआवलेन। हमरे इहाँ त बजड़ी मेथी कऽ दाना आपके मिली। थोड़ा लिखब बहुत जानब। बाल बच्चन के यथा जोग।

—॥ साग आउर गाड़ी ॥—

[मू० ले० श्री भाष्कर]

ओह दिन बजार गइल रहलीं—

एने ओने घुमला के बाद देखलीं कि एक कोना में करिया–गुलाबी पात वाला साग के दोकान छनाइल रहे। देखला में बड़ी नीक लागल।

पुछलीं—'कइसे ?'

छव आना सेर, सरकार'

'कइसे देबे, ठीक-ठीक बोल'

'छः आने कह देलीं'

'तीन आने'

'ना'

'चार आने ?'

'ना सरकार, छः आना से कम ना।'

'एक सेर तउल दे'

साग तउलल गइल। पुछलीं—'पलरा फेर के दे।'

'देखीं सरकार' कह के तरजूआ देखा देलस। बोललीं, 'अइसहीं सब कोई के ठगत रहेलऽ।'

बोल एक मुट्ठा साग आउर ले लेलीं।

बोललीं—'कम से कम एक मुट्ठा साग ले लेलीं एक पइसा ठग देलस'

घर पहुँच के बजार के चीज एक ओरे रख देलीं फेए कइसे-कइसे साग वाला हमरा के ठगे के चाहत रहे आउर कइसे हम एक मुट्ठा साग बेसिए लेके चल अइलीं—ई सब आपना मेहरारू से कह देलीं। तब ले नोकर एक ठो चिठी दे गइल—कहलस चिट्ठी

www.bhojpurisahityangan.com

के आदमी बाहर आस जोहत बा।

लिफाफा के भीतर दोकान के बिल रहे। 'दी येट ऐशियाटिक मोटर इन्जिनीयरिंग कम्पनी' भेजले रहे। कइएक दिन से, तनीआसा मोटर के इन्जिन खराब भइला से ओकरा कने पड़ल रहे, मरम्मत खातिर। ई ओकरे बिल रहे।

बिल के कागज पर अंट-संट चीज लिखल रहे। फलाना-ढेकाना। एके चीजवा के बार-बार लिखल रहे—इंन्जिन के ढक्कन खोलल गइल रहे, पेट्रोल के नल खोंलज गइल रहे—पिन से बाहर कइल गइल। एक्स्लेटर स्प्रिंग खोलल गइल, जाल खोल के बाहर कइल, फ्लाट-चेम्बर खोलल गइल, जेट के मुँह फूंकल गइल, जेट के मुँह फिर बन्द कइल गइल—ढक्कन के ऊपर स्प्रिंग पिन देल गइल फिर ढक्कन अँटकावल गइल—अइसने दुनिया मानी के काम लिखल गइल रहे। आउर आखिर में मोट-मोट हरफ में लिखल रहे—'११५० रुपया कुल' सुन के गृहणी कहली—

'अतनी सा मरम्मत के अतना रुपया ?'

'तब का एतना बड़ कम्पनी बइमानी करी ?'

बाहर आदमी इन्तजार करत रहे। बिल के रूपया लेके सीधे चल गइल।

अनु० श्री गौरीशंकर सिनहा

गीत

[श्री गोपाल मिश्र 'केसरी']

ई जिनगी तऽ भार भइल बा
दिन भर के हारल थाकल जब
सांझ पहर हम घर पर अइलीं
पतनी ले मुठ भेड़ भइल तब
सूखल रोटी भी ना पइलीं
कउन करमे के ई "नोकरी" कि
करजा अउर उधार भइल बा
जर बोखार सरदी खाँसी में
कबहुँ सब पइसा चल जाला
कबहुँ नेवता में छट्ठी के
बीवी के गहना बन जाला
अपने दामा जोर करत बा
पर दुरलभ उपचार भइल बा
रात दिना के ई किच-किच से
कइसे जान बचावल जाई
सूख रहल बा कंठ भूख ले
कइसे कविता गावल जाई
अइसन जोत जगवलस कउनो
दिन में हीं अंधियार भइल बा

www.bhojpurisahityangan.com

बोरो

रूसी उपन्यास

गतांक से आगे

ले० वण्डा वासिलेव्स्का

अनु० रघुवंशनारायण सिंह

पुसिया कहीं बाहर गइल ना, केहू ओकरा से बतिआवल ना, तब ओकरा मालूम कइसे भइल? एह बिपत के मारल मातारो के दुखड़ा दुस्मनन तक के पहुँचावल? वास्या के देह, खून, मउअत दुख के कहनी के के जरमनन के कान तक पहुँचावल?

फेनु गिलास एक बे किर-किराइल आ बन हो गइल। पुसिया आपन जूता पेन्हलस, आपन फर के कोट के बटम खूब सज से लगवलस। एह खूबसूरत कोट के कर्ट शहर में केहू से छिनले रहे आ अपना मेहरारू पुसिया के भेंट चढ़वले रहे। ई कोट गरम आ आराम देवे वाला रहे। एकर ऊँचका कालर, गरदन के ठँढक से बचावत रहे।

पुसिया सायबान से बाहर निकलल आ लामा साँस लेत आगे बढ़ गइल। हवा साफ आ ठंढा रहे बरफ हवा में भरल रहे। बरफ छाँह में नील रंग के लउकत रहे लेकिन सुरूज का किरिन से ऊ हीरा नियर चमकदार होके आँख में चोन्हरी पैदा करत रहे। जवना पहाड़ी पर गाँव बसल रहे ओकरा दहिने आ बावें, दूनों ओर चकमक, उजर आ नीला, वे ओर-छोर के मैदान फैलल रहे जमीन से आसमान ले बरफ से भरल रहे। सड़कन पर बसल सान्त गाँवन के भी ई गरस लेले रहे। पुसिया झोंपड़ी का ओर देखलस। जहाँ-तहाँ सिपाही हल्ला-गुल्ला मचवले रहन स। चउक में चरच का सोझे तोपखाना के तोपन के करिया कतार लउकत रहे आ एने-ओने सिपाहिन के संतर खड़ा रहे। बाकी उहाँ गाँव के रहे वाला एको आदमी ना लउकत रहे। कर्ट से मिले खातिर पुसिया आफिस में गइल।

चउक का एक कोना पर फाँसी के एगो तखता लागल रहे। एक आदमी के लास ओह पर लटकल रहे। गाँव पर कर्ट के अधिकार के एह चिह्न के बे मन के देखत पुसिया पार क गइल। एह चीज के ओकरा आदत हो गइल रहे। एक महीना पहिले जब ऊ कर्ट का साथे आइल तबे से एह जबान के लास के लटकत देखत रहे। ऊ सूख के काठ हो गइल रहे—सरीर के चिन्ह भी भूला गइल रहे आ अब एगो लकड़ी का कूँदा नियर लटकल रहे। ओकरा चलला से बरफ पर चरमर आवाज होत रहे—जइसे सीसा का टूटला से होला। झोंपड़ा के जंगला नीचे से ऊपर तक बरम के मोट परत से ढकल अइसन बुझात रहे जइसे पथल के आँख होखे।

ओह झोपड़ियन से धुआँ निकलत रहे जवना में जरमन अड्डा जमवले रहन स। दोसरा घरन में रसोई ना बनत रहे काहे कि खाए बनावे के कवनों चीजे ना रहे।

एगो झोंपड़ी के दरवाजा खुलल—जवना में से एगो गेहुँमन आदमी बाहर देखलस आ पुसिया के आवत देख फेनु से दरवाजा बन क लेलस।

www.bhojpurisahityangan.com

पुसिया सिहर उठल।

ऊ जानत रहे कि लोग ओकरा से भुला के भी मिले से घिरना करेला—जइसे ऊ कवनो छुतिहा बेमारी होखे। लइका ओकरा के देख के भाग जात रहन स। अगर ऊ लोग अइसन करत रहन त करस ओकरा एकर परवाह ना रहे। उनका भाग में बदल बा कि ऊ भूख आ जाड़ से मरस त मरो लोग। बाकी ठीक एकरा उलटा एगो ऊ बीआ जे ऊँचा कालर के फरकोट पहिरतिया, मस्त रहतिया, मउज मारतिया आ चाकलेट उड़ावत बिआ। कुछ दिन के बाद ऊ अपना पति कप्तान के साथे जरमनी जाई। सभ केहू अपना-अपना भाग के बनावे वाला होला—ऊ लोग आपन राह खोजले—ऊ आपन खोजलस। बुरबक सभ सरग में सिढ़ी लगावे का फेर में पड़ल बाड़न, जवन कबहुँ होखे के नइखे। ओह लोग का किस्मत में बदल बा असफलता के कड़आ घोंट। कर्ट एक दिन ओकरा के समुझवले रहे कि जरमनी के जीत काहे पक्का बा आ इहो कहले रहे कि अगर ऊ लोग इमान्दारी से जरमनी के साथ ना दिहें त ओह लोग के नास तय बा। अतना साफ भइला पर भी ऊ लोग एह मामूली बात के ना समुझल। ऊ लोग उनकर राह देख रहल बा जेकरा खातिर ओकरा थोरहुँ उत्सुकता नइखे। का अब ओकर हालत पहिले से अच्छा नइखे—जरूर बा।

असही सोचत पुसिया चलल जात रहे।

ओकरा चाल में तेजी रहे आ आँख में चमक। ओकरा बूट का ठोकर से बरफ छितरा जात रहे आ चोंय-चोंय के आवाज करत रहे। ऊ झूँझला जात रहे—ना जाने ई बरफ के दुख कब दूर होई। ऊ दिन कतना सुख देवे वाला होई जब चमकत घाम के आनन्द ऊ लूटी आ सरीर के अंग-अंग फरके लागी। हड्डी तक, अतना कड़ेर जाड़ का बाद धूप मिलला प निहाल हो उठी। ओफ! अइसन बेहद सरदी। चमकत गरम सुरूज भी बुझाता कि बरफ के पिंड बन के सरदी बरसा रहल बा।

संतरी बिना रोक-टोक के ओकरा के भीतर जाये देलस। ऊ दरवाजा के खट-खटवलस बिना कवनो जवाब के इन्तजार कइले आफिस में चल गइल—कर्ट के मातहतन के सुबहिता-बेसुबहिता के भी खिआल ना कइलस, ऊ।

"का? का बात ह?" कर्ट पूछलस

"कुछ ना?" चिढ़ के ऊ बोलल "अकेला में तोहार कमी खटकत रहे आ हम बेचैन हो गइलीं, तोहरा खातिर। "आ ऊ आपन, जाने खातिर चाह भरल आँख दउरवलस टेबुल का भीरी खड़ा मेहरारू के तरफ—अधेड़अवस्था, फूलल पेट, चेहरा पीअर-गर्भवाली। पुसिया कुर्सी का किनारा बइठ गइल।

"का तोहरा जल्दी फुरसत होई?"

"हम त तोहरा के कह चुकल बानी.....देखत नइखू कि हम कतना बाझल बानी।"

"ऊ त, अपने पहिल हो से झँझलाइल रहे। खिड़की का ओर अकेला में ले जाके खिसिअइले गते कान में कहलस।

"हम कई बेरा तोहरा के इहाँ आवे से मना कर चुकल बानी। तोहार ई चाल हमरा पसंद नइखे। हम बाझल बानी, देखताड़ू कि हमरा कतना काम बा, हम कतना फँसल बानी

ऊ रूसल लइका नियर मुँह फूला लेलस।

"कतना भेआवन अकेला में हमरा रहे के परेला कम सेकम खाए का बेरा भी त तू घरे आ जइत हमनी एक साथे खा त लीतीं। अकेलापन हमार जान खइले जात बा .....तूँ ओहीजा रहना..... आखिर एह खुसट बुढ़िया से बात करे में तोहरा कवन मजा आ रहल बा? ई काम त केहू दोसर भी कर सकत रहे।"

"ना दोसर केहू ना कर सकी। ई औरत गोरिला ह, समुझत नइखु नु।"

www.bhojpurisahityangan.com

पुसिया घबड़ा गइल। "एक गोरिला ! कर्ट तू कहत का बाड़ ? एकरा ओर देख ! एकर त दिन पूरा हो गइल बा, एकरा लइका के होनीहारी बा।"

"देख," ऊ कहलस "चल जा अबही चल जा, हम तुरंत आवत बानी।"

पुसिया गते-गते ओकर कान्हा थपथपवलस

"प्रिय कर्ट ! हम कुछ छन इहाँ बइठ के सूनब। हम कवनो तरह से तोहरा काम में हरजा ना पहुँचाइब

"खैर, तोहार मने बा त बइठ, ई कुछ आनन्द देवे वाला नइखे।" ऊ आपन हाथ हिलावत कहलस आ कुरसी ओकरा ओर घसका देलस।

ऊ अपना कोट के बटम खोल के बइठ गइल ओकर बेहूरमन के हँसी ओकरा ओठ पर से ना गइल आ ओकर करिया गोल आँख टेबुल का बगल में खाड़ औरत के देखे लागल। ई गोरिला ह ? ई त अजब.....सँचहु अजब बा। ऊ जानत रहे कि कर्ट गोरिलन से बहुत डेराला जदपि ऊ कबहीं एह बात के कबूल नइखे कइले कि ऊ केहू से डेराला। बाकी ऊ गोरिलन से डेराला, ऊ एकर अनुभव करत रहे। गो के ऊ जानत ना रहे कि काहे ओकरा मन में ई एगो विजय के भाव पैदा करेला। तब कुछ अइसन जरूर रहे जवन अजय, आत्मा में विस्वासी कर्ट में भय के सिरजन करत रहे गर्च ओकरा पास बराबर उचित उत्तर रहत रहे आउर ओकरा सब बतुस साफ आ सीधा जानात रहे।

ऊ अइसन गोरिला के कल्पना भी ना कइले रहे। ऊ गोरिलन के तसवीर देखत नियर,अपना मने में, बना लेले रहे, जेकरा हाथ में टाँगो, फेरूसा होखे आ भर देही बार भरल होखे। ऊ भेद भरल जीव होइहें जे जंगल में रहेला आ जेकरा यह भयंकर पाला के तनिको फिकिर ना रहे, जे सँऊसे संसार के अतना देरी से गरस लेले बा। आ ई एगो महमूली, फिडोसिया क्रंचुक नियर गाँव के औरत रहे, जे केहू से फँस के 'पेट रखवा' आइल रहे। पुसिया ओकर करियवा पुरनका कोट के ओकरा बढ़ल पेट पर खींचल देखलस। ओकरा अपना छोटाइ आ दूबराई पर एक तरह से खुसी भइल आ साथे-साथे इहो कि ऊ मोलायम फरकोट पहिरले सान्ति से बइठल बिआ आ जब चाहीं तब उठ के चल दीही, ऊ फेनु-गिलास बजा सकेले आ कर्ट का साथे नाच सकेले। ऊ चाहे त आजे साँझ खानी ई सभ हो सकेला।

कर्ट हारल-थाकल बिना उत्साह के आवाज में सवाल पूछत चल जात रहे आ ऊ मेहरूआ जवाब देत चल जात रहे। पुसिया पहिले सवाल-जवाब सुनलस मगर तुरते तय कइलस कि खाली बे रसे के नइखे बलुक बउड़ाही से भरल भी बा। कर्ट एके चीज के बारबार पूछता आ ऊ ओतने नापल-जोखल सब्द में जवाब देत चल जातिआ।

थाकला से ओलेना बेदम हो गइल रहे। करिया धब्बा ओकरा आँख का सामने नाँचे लागल आ करिया लहर टेबुल का नीचे से उठ के ओकरा आगा अन्हार फैलवले जात रहे। ओह बढ़त करीअई, जवन ओकरा चारो तरफ छवले जात रहे, के पार करे खातिर ओकरा अपना हर नस के जोर लगावे के पड़त रहे। आ अइसन समय में टेबुल का बगल में बइठल अफसर, ओकरा सामने परल कागज आ ओकरा पाछा के जँगला ओह करिअई में पँवरत रहन स। ओकरा बुझाइल जइसे पसेना छूटत होखे, ठंढा, चटचटाह आ असुख कर। ओकर हाथ लोहा नियर भारी हो गइले स, ओकर गोड़ ना सहाय लायक दरद से दुखाए लागल, साइत ऊ भयानक रूप से फूल गइल रहन स। ऊ इहाँ कतना देर से खड़ा रहे ? एक, दू, तीन घंटा से ? अधिको हो सकेला भा दिन भर से। बाकी ना सुरूज अबहीओ चमकत रहस एह से जतना ऊ सोचले रहे ओतना देरी ना भइल रहे ?

ओकरा ओदर में दरद होत रहे आ सँउसे देह में अइसन दुख होत रहे जइसे केहू ओकर नस ध के

www.bhojpurisahityangan.com

गते-गते घींचत होखे। आ एह सब के खेलवाड़ में ऊ आइल रहे। ओलेना ओकरा बारे में जानत रहे कि ऊ के रहे। ऊ आपन गोल आँख चमकावत बइठल रहे। अब ऊ आपन फर के टोपी ले लेले रहे आ अपना बारन के कान का पाछा फेंकत रहे। ओह औरत के धाकल आँख ओकरा एरिन के चकमक रतन के चमक पकड़ले ओही पर ठहरल रहे। ओकर सीसा आग के लहर बिखेरत रहे। तब फेनु अन्हार फैले लागल आ केवल उहे तेज पातर किरिन के लकीर ओह करिया लहर के छेदत रहे, जवन ओकरा के घेरले रहे। ओलेना हिलल आ मुट्ठी बान्ह के एक बेर आपन जीव कड़ा कइलस। ना, ना ओकरा इहाँ, एह अफसर का रखेलिन का सोझा गिरे के ना चाहीं, जे अपना लोग के बेंच देले रहे आ एह अफसर का साथे सूते खातिर चल गइल रहे, जवन एह घरी उहाँ फर कोट पेन्हले आपन एयरिंग चमकावत बइठल एगो गरभिनी औरत पर एक जर्मन अफसर के जरिये अत्याचार होत देखत रहे, जइसे ओकरा लाभ के कवनो तमासा हो।

पुसिया के ओठ पर सूखल हँसी के लकीर खींचा आइल बाकी ना त ऊ ओलेना का बारे में कुछ सोचलस आ ना ओह सवाल जवाब के सुनत रहे। अपने गरम रहे—फर कोट पैतावा का ओजह से—आ ई सोच के खुस होत रहे कि ऊ कर्ट के आफिस में बइठल रहे आ ऊ अइसन रहे जे निधड़क उहाँ आ जा सकत रहे। बाकी दोसर उहाँ जे आवत रहे ऊ संगीन वाला सिपहियन से घेराइल आवत रहे आ लौटला पर अइसन जगह पहुँचावल जात रहे जहाँ से केहू लवटे ना। लोग ओह कर्ट से डेरात रहे जे ओकर हो चुकल रहे—खाली ओकर। ऊ जतने मन बहलाव पसंद करेले ओतने कठोर भी रहे जब रूस जात रहे तब जल्दी मनते ना रहे। कर्ट दुलार से ओकरा के बनरी कहत रहे आ अपना साथे ड्रेसड्रन ले जाये के सोचत रहे।

'तू मतारी हऊ?' कर्ट पूछलस।

ओलेना के सिर चकरात रहे बाकी ई बात जइसे ओकरा खातिर डूबता के सहारा तिनका हो गइल।

निसन्देह ऊ एगो मतारी रहे। जरमन अफसर के दिमाग में ई बात आइल भी ना होई कि अनजाने में ओकरा से कहा गइल होई। अनजाने में ऊ एह सब्द के जरिये ओकर कतना मदत कइलस। ई मदत ओह समय कइलस जब ओकरा गोड़ तर से जमीन घसकल जात रहे। जब कमजोरी ओकरा के मारे पाँजे में ले आइल रहे आ जब ओकरा चारो तरफ के हर चीज अन्हार में डूबत उतरात रहे।

"तू माई हऊ?"

ई के कहल, ऊ सोचे लागल। टेबुल के पाछा बइठल जरमन अफसर या खुस मिजाज, चेहरा पर सीतला के दाग वाला कर्ट, जवन गोरिलन के दस्ता के जंगल में सरदार रहे।

"तू एगो माई हऊ?"

ऊ अपना कोख में पड़ल लइका के बारे में ना सोचत रहे, जे ओकरा फेफड़ा के हवा से सांस लेत रहे आ ओकरा के तन के खड़ा ना होखे देत रहे। ऊ ओहनी का बारे में सोचत रहे जवन ओकरा के जंगल में माय कहत रहन स। ऊ ओकनी सभन से उमिर में बड़ रहे। ऊ कई जगह देखे-सुने खातिर गइल रहे, ऊ एगो पुल उड़ा देले रहे बाकी एह सब के ऊ आपन असली काम ना समुझले रहे। रसोई बनावल, उन्हन के कपड़ा आ जूठ बरतनन के सफाई कइल आ ओहनी के देख-रेख कइल, जेकर देख-रेख करे वाला केहू ना रहे—ओकर काम रहे। ऊ बेमारन के सेवा करे, घवाहिलन के मलहम पट्टी करे आ ओहनी के फाटल कपड़न के सी-सा के ठीक कर देत रहे। ऊ ओह सभ काम के करे जवन मातारी का करे के लागेला आ ऊ सभ ओकरा के कहस, माय।

"तू माय हऊ?"

क्रमशः

www.bhojpurisahityangan.com

—॥ दही—चीनी ॥—

[श्री चटोर]

चाबस भाई चोर लोग, बधाई, बधाई, बहुत बधाई, अनेक बधाई, हर तरह से रोज रोज के बधाई! अरे बाप! जहाँ हमन का दिनों में जात डेराइला ऊहाँ रात में जाके, घर में घूस के, सेफ के केवाड़ी ओकाद के, चोरी क लेल का महमूली काम बा आ ऊहो कलट्टर का घर में। वाह! खूब, एह सफलता खातिर बधाई, जे जहाँ हो उहें ओकरा के बधाई।

कलट्टर साहेब का चाहीं कि सरकार के लिखस कि ऊ ओह चोरन के 'वीर चक्र' नाँव के तगमा देव। ओहनी का एह साहस के बलिहारी बा।

एक बात आउर कलट्टर साहेब का चाहीं कि बिहार के मुख्य मंत्री श्रीकृष्ण सिंह पर अपना चोरी भइल मालन के दावा करस। जब प्रजा के जान माल के जिम्मेवारी सरकार ले लही बाय त ऊ अपना जिम्मेवारी से चूकल काहे?

आरे का पुलिस अफसरन के भी बधाई। खूब सूत, खूब चोरी करावऽ। जब केहू इतलाय देबे जाय त पहिले ओकरे से महमूली धरवा ल, तब लिख आ फेर त मुद्दालेह के पाई के मउज उड़ाव, कोठा आबाद कर-केहू बोले वाला बाय, ई त आपन राजनु ह। खूब रुशवत ल खूब झूठ लिख, बने त दूनों ओर से हाथ साफ करऽ।

मुनसिफ मैजिस्ट्रेट लोग के भी बधाई। खाली तुक बन्दी करो लोग। चोर बदमासन के छोड़ देबे खातिर अच्छर के ना मात्रा के भी तुक मिल जाय, धून में भी समता होय त छोड़ दीं सभे। अपने सभे न्याय मूर्ति जे बानी। हजार दोसी छूट जाँय कोई परवाह ना, एक निरदोस के सजाय ना होखे के चाहीं। इहे नु असली न्याय ह।

❀ ❀ ❀

बरमूडा में तीन महान मिल के चउठा महान से बरलिन में बात करे के तय कइल लोग बाकी चीन-भारत के भूला गइल लोग। ओह लोग का जाने में चीन के सरकार फारमोसा में बा जेकर चीनी जनता पर कवनो अखतियारे नइखे आ भारत के सरकार इंगलैण्ड के छोटका टपुअवा में बा। एह से एह दूनों से ना बतिआई लोग।

❀ ❀ ❀

पकिस्तान का अमेरिका से इआरी जोड़ाता। इंगलैंड से बुझला मोह टूटल। ई बहुत ठीक भइल हा अपना सबांग से हितई चलबो ना करे आ देआद आ दाल जतने गले ओतने नीको लागेला। एह से पाकिस्तान भारत से दोस्ती ना राखी। भला घर के देवता के पूजा ऊ कर सकेला।

❀ ❀ ❀

मद्रास के एक मंत्री के कहनाम बा कि केहू चाहे कुछुओ करो बाकी राजा जी मुख्य मंत्री रहीहन। बेसक साहब रहस के मना करत बा उनका त राजा रहे के चाहत रहे बाकी मंत्रीय पर राजी बाड़े त का पूछे के। अब नरको में ठेला ठेली। लीं उनके राय पर जवाहर लाल के भी मोहर लाग गइल।

❀ ❀ ❀

बिहार राष्ट्र भाषा परिषद भी सनक गइल। ऊ का दो राजेन्द्र बाबू के इनाम दी ही। अब मा लीं ए बाबू एह अनेत के ओर बा? राजेन्द्र बाबू त आज दुनिया भर के इनाम देस। उनका कृपा से त कतना जाना

www.bhojpurisahityangan.com

मंत्री बाड़न, कतना जज कलट्टर भइल फिरत बाड़न अब ई लोग उनका के कवन इनाम दी ई नइखे बुझात आ उनका के इनाम देला बिना बिगड़ले का जात बा। उहे इनमवा भोजपुरी के दीत लोग त जनता के कुछ भला होइत ।

❀ ❀ ❀

कोरिया (आधा के) राष्ट्रपति डाक्टर री का दिमाग में अमीरकी भूत समा गइल बा एह से उनका बराबर कम्युनिस्ट भूत सामने ही रहत बाड़े स। तारीफ के बात त ई बा कि अपना के ठेकाने ना आ गाँव भर के नेवता दिआत चलत बा। कादो ऊ समूचे एसिया से कम्युनिस्ट भूत के भगा दीहें जवना में चीन आ भारत भी बा। इहे लंगड़ कहाला।

❀ ❀ ❀

वाह मास्टर तारा सिंह जी! अपने के पंजाब के बटवारा भी ताकते से करा के पाकिस्तान के जनम दे देली अब पंजाबी भासी राज्य भी ताकते से बना लेवे के काम बा तबे नु हमनी के अपने के मरदानगी मानब जा। बाकी अतना खून खराबी करा के भी अपने का सिखिस्तान ना बना सकलीं एह से हमरा डरे बा कि अपने के इहो सपना साँच होई कि ना? अगर पंजाबिअन का अकिल से भेंट होई तब त मास्टर तारा सिंह का बात में केहू ना आई काहे कि इहे सिख राज खातिर तरुआर भाँजत रहन बाकी जब ऊ चले लागल त इहाँ का कवना बिल में घुसलीं पता ना लागल।

* * *

भोजपुरी के संस्थापक आ प्रबंध संपादक पंडित मुक्तिनाथ के एह बुढ़ापा में जब अंग्रेज चल गइलन स अंग्रेजी पढ़े के साथ लागल हा। का दो हिन्दी का मारफत कम्युनिस्ट साहित्त बुझे में ऊहाँ का अनकसावन बुझात बा। असल बात त ई बा कि हिन्दुस्तान का कम्युनिस्टन के फौरी भासा उनका बुझे में तनी गड़बड़ाह परत बा। इहे कहाला कि बूढ़ घोड़ी का लाल लगाम।

❀ ❀ ❀

उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त बड़ा सकेता पड़ल बाड़े आ बुझाता कि उनकर इआर पंत जी उनका के जरोको मदद करे के तइआर नइखन। लोग कहता कि लखनऊ विश्वविद्यालय के खजान्ची रावाँ मत रही आ ओनही ढेर मोह होखे त मंत्री मत रहीं अब त मरद के भइ गति साँप छुछुन्दर केरी। अतना चाल चल के त बेचारा ई दूनों काम हथिअवले रहे। गेहुँम का साथे घूनो गइल। हमरा प्रांत के श्री राम चरित्र सिंह के भी ऊहे हाल बा। इहो मंत्री आ खजानची दूनों बाड़े, इनको पर उहे कानून लागी। बाँड़-बाँड़ गइल नव हाथ के पगहा लेले गइल।

❀ ❀ ❀

बेशक पंडित गुप्तेश्वर पाण्डेय। जे आदमी जिनिगी भर राजनीति में सुलहे के बात बतिआवल ऊ एह गिरला उमिर में अखाड़ा में कूद पड़ी अइसन आसरा ना रहे। बाकी वाह भाई खूब! गिरिजी बड़ा फुट-फुट कइले चलत रहले हा बाकी अब बुझाइल बा।

शाहाबाद जिला बोर्ड के चेयरमेन पं० गुप्तेश्वर पाण्डेय का खिलाफ अविश्वास के प्रस्ताव पास क के श्री महादेवा नन्द जी, चेयरमैनी का कुर्सी पर बइठे के फेर लगवले रहस तले पाण्डेय जी हाई कोट में केस क देलन कि पाँच बरिस के बाद इ बोर्ड रहीये ना गइल, प्रस्ताव पास करे के इनकर कहाँ हक बा। अब पटना में दूनो गोल भीड़ल बा। देखीं जे ऊँट कवना करवट बइठेला।

---

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

राष्ट्रपति के जन्म दिन—

अबहीं गत ३ दिसंबर के राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के ६९ जनम दिन देस भर में मनावल गइल हौ। राष्ट्रपति जी देस के रत्न हईं आ ऊहाँ के जे गुनगरोह बा ओकरा के गावे खातिर पोथा चाहीं एह पन्ना से काम ना चली। तब एक बात जबन हमरा मोह आ सरधा के बा ऊ ई कि राष्ट्रपति जी भोजपुरी हईं आ ऊहाँ का सुरूम से आखीर तक भोजपुरी हईं।

हमरा जाने में भोजपुरी के अतना सज से सधले केहू नइखे। स्वर्गीय सिन्हा साहेब एगो भोजपुरीहा रहले जे बराबर भोजपुरी में ही बोललन आ नवही लोग जब खड़ी बोली उनका सोझा सुरूम कइल त दुलार से ही सही बाकी बड़ा बेरोख हो के डाँटत रहले हा। राजेन्द्र बाबू में ऊ बात नइखे। इहाँ का जान जाइब कि जे आदमी ऊहाँ से बतिआवत बा ऊ भोजपुरी ह त ऊहाँ का खड़ी बोली में ना बतिआइब चाहे ऊ आदमी खड़ी बोली में ही का हे ना बतिआवत होखे।

ऊहाँ का सजग अतना रहीला कि चाहे कइसनो भीड़ ना होखो बाकी ओह में उनकर जानल पहचानल केहू मिल जाय तो ऊ ओकरा से भोजपुरी बतिआवे लगहें। उनका एह बात के परवाहे ना रहे कि ऊहाँ मौलाना बइठल बाड़न कि पंडित जी बाड़े। अभी एक दिन संसद के सदस्य लोग कहत रहे कि ऊहाँ का त अब चिन्हतो नइखीं जे जाता सेकरे से भोजपुरी में बतिआवे लागत बानी। कहाँ दो मध्य प्रदेश में जाके ऊहाँ का भोजपुरी में भासन दे आइल रहीं।

ई सभ बात भोजपुरी के गरब गुमान के बात हो गइल बा आ एकर भगवान से बिनती बाय कि ऊ राष्ट्रपति के जिनिगि बहुत बड़ करस कि हमहन का अइसन ढेर दिन मनावे के मिलो।

भोजपुरी साहित्य

अबहुओ कहता लोग कि भोजपुरी के कवनो साहित्त नइखे आ कुछ लोग तबो कही जब ऊ उनका माथा पर चढ़ के ढोल पीटे लागी कि हम बानी। एह तरह के कहनीहार लोग साइत साहित्त के माने समुझले ही नइखन। भोजपुरी में कवनो साहित्त नइखे एकर माने भइल कि भोजपुरी में कवनो साहित्त नइखे आ ओकर माने भइल कि जन जीवन में कवनो साहित्त नइखे। एही से हमार कहनाम बा कि जे साहित्त रावाँ सामने बा, जवना के रावाँ साहित्त मनले बानी ऊ साहित्त आसमानी ह ओकरा जन जीवन से कवनो मतलब नइखे।

अबही साइत २ दिसंबर के काशी से निकले वाला भारत भर के दैनिकन में मसहूर आ बोजन वाला 'आज' भोजपुरी के एगो लेख छपले रहल हा आ ओकरा पर ऊ इनाम भी देले बा आ पहिला। ओह लेख के ओह लोग का पढ़े के चाहीं जेकरा भोजपुरी के साहित्त के खंचित पता नइखे। बहुते एकबारन के संपादक लोग अन्दाज पर बात लिख जालन आ ग्रन्थ के लिखनिहारन में भी ई दोस कम नइखे। एक त ई एक दम मसकिल बा कि सब आदमी दुनियाँ के सब बात जान जाव मगर ओह

www.bhojpurisahityangan.com

में से एक आदमी ऊँचा चढ़ के बोले लागे आ ओकरा नीचे का बा एकर पता ओकरा ना होखे त तनी काम गड़बड़ाला। अपने का ना जनलीं एकर कुफल त हमरा भोगे के परल। अपने बे सोचले समझले कह देलीं कि भोजपुरी में साहित्त नइखे। अपने के पाछा ढेर लोग कहे लागल कि भोजपुरी में साहित्त नइखे। बस भोजपुरी के नास भइल।

बिहार सरकार गलती करे, ओकर अधिकारी लोग भी उहे आससानी बात करस त हमहन का करीं। मगर हमन के कहनाम बा कि भोजपुरी में केवल साहित्ते ना ओकरा आपन सब्द भी बा। भोजपुरी अनका धन पर बिकरन राजा नइखे बनल। संसकीरित नियर भोजपुरी का आपन सब्द बनावे के बल बा आ दोसरा के सब्द लेके हड़प जाये के ताकत बा। भोजपुरी केहू से उधार लीही त आपन बना के। ऊ नउआ के जामा ना बनाई कि जहाँ जेकरा मन में आई से कह दीही कि अरे ई जमवा त नउआ के ह। आदमी के मन के सभ भाव के प्रगट करे के ताकत भोजपुरी सब्दन में बा।

भोजपुरी के एक कथा जबना के फदगुदी के कथा नाँव दिया गइल बा ऊ अगर सगरे नइखे खाली भोजपुरे भर में बा त हम कह सकत बानी कि सारे संसार के सब साहित्त में ओह जोड़ के चीज नइखे बाकी हमरा अइसन बिस्वास नइखे कि आउर जगह ई ना होई। जन साहित्त के धारा, नीचे से जनता का हियरा में हिलोर उठावत रसे-रसे बहत चल जाला। ऊपर से ही छाल्ही छिले वाला लोग से एकरा भेंट ना होखे। जन-जीवन में चले वाला दँत-कथा के बटोर के तनी नीमन छपाई क दिआए त आज के कवनो उपन्यास भा कहानी संग्रह ओकर मोकबिला ना कर सके।

हम हिन्दी साहित्त के कुछ घमंडी लोग से पूछे के चाहत बानी कि 'पृथ्वी राज रासो' आ 'बिसल देव रासो' से लोरिकायन आ कुँअर बिजयी कवन्न बात में कम बा बाकी का जाने काहे दो काशी नागरी प्रचारिणी सभा के ई किताब छापे के ना सुझल आ चल गइल लोग राजस्थान। संभव बा कि घर के जोगी जोगड़ा आ बाहर के जोगी सिद्ध बुझाइल होखे। आरा के नागरी प्रचारिणी भी एह काम के ना कइलस इहे अफसोस बा।

भोजपुरी के साहित्त अँजोर में आ रहल बा आ ऊ बहुत जल्दी ओह लोग पर आपन आसन जमाई जेकरा अबो राते लउकत बा।

'आज' के आभार—

काशी के मशहूर एकबार 'आज' भोजपुरी के पूरहर जगह अपना में दे रहल बा। अतने ना ऊ लोग में जोश भी भर रहल बाय। अभी हाले में भोजपुरी के एक लेख के इनाम देके आज के संपादक मंडल भोजपुरी का साथे अतना उपकार कइले बा कि भोजपुरी से ओकर बदला ना दिआ सके। अतने भर ना 'आज' आपन दुआर भोजपुरी खातिर खोल देले बा। कविता त ऊ लोग बहुत दिन से छापत रहन बाकी अब निबंध, कहानी, लेख सब चीज भोजपुरी में छपीहन। अगर भोजपुरी भाई लोग का जरूरत बुझाई त पूर्वी क्षेत्र के पूरक पृष्ठ समूचा भोजपुरी कर दिआई।

आज के एह उदारता खातिर ओनके जेतना धन्यवाद दिआय ऊ कमे होई। आज में समय के गति पहचाने के अकिल भगवान देले बाड़े आ इहे कारन बा कि आज तक हिन्दी में अतना समाचार पत्र निकललन बाकी केहू आज के मोकबिला ना कइल। हमार त आज के सामने माथा झुकजात बा आ आज के उपकार कबहु भुलाये के ना चाहीं अगर अपना में कुछ अदमियत होखे।

www.bhojpurisahityangan.com

प्राचीन धार्मिक पुस्तकों

के अनुकूल

सैकड़ों जड़ी बूटी औषधियों

तथा सुगन्धित वस्तुओं एवं घृत इत्यादि

से बनी हुई

❀ प्रकाश देवधूप ❀

से

नित्य अग्निहोत्र देवपूजा करें

निर्माता

केशरी इन्डस्ट्रीज

प्रो० बसावनराम एन्ड सन्स

चौक, आरा।

भैरव-मलेरिया खातिर

आ

टैरव-पिबरी, पिल्ही, लीवर

अउर

खून के कमी भइला पर

जरूर सेवन करीं।

विहार-आयुर्वेद-भवन,

आरा।

चसमा-घर

जेल रोड, आरा।

भोजपुरी के लोक गीत

श्री कृष्णदेव उपाध्याय एम. ए. पी. एच.डी.

के संग्रह

भोजपुरी ग्राम-गीत दू भाग में

आ

महाराज कुमार बाबू दुर्गा[illegible]साद सिंह

के

भोजपुरी लोक-गीत में करुण रस

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

पयाग से मँगा के पढ़ीं

छप गइल

कविवर रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के

कोइलिया के बाद दूसर गीत संग्रह

सितार

भूमिका—डा० उदयनारायण तिवारी

डबल क्राउन ११२+१६ पृष्ठ मूल्य २) डाक ।≈)

पता—भोजपुरी कार्यालय, आरा।

मोती लाल एन्ड ब्रदर्स

जेल रोड आरा

MOTILAL & BROS., Book Binder

यहां पर हरेक किसिम का वाइडिंग, रूलिंग और नम्बरींग का काम सस्ते दर पर होता है।

एकबार परीक्षा करें।

www.bhojpurisahityangan.com

'भोजपुरी' के संरक्षक

१ पंडित मुक्तिनाथ मिश्र, विहार आयुर्वेद भवन, आरा।
२ श्री रंगबहादुर प्रसाद, एम. एल. ए., सभापति, शाहाबाद जिला कांग्रेस-कमिटी, आरा।
३ डाक्टर पूर्णेन्दु प्रकाश गांगुली, नेत्र-चिकित्सक, जेल रोड, आरा, मंत्री भोजपुरी-समिति।
४ श्री व्रजकिशोर बहादुर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, बिजली सप्लाई कम्पनी, आरा, उप-सभापति, समिति।
५ श्री अब्दुल कयूम अनसारी, एम. एल. ए. भूतपूर्व पुनर्वास-मंत्री, विहार, पटना, ,, ,,
६ श्री महावीर प्रसाद झुनझुनवाला, चौक आरा।
७ श्री कृष्ण बहादुर, एम. एल. सी. भट्टाचार्जी रोड, पटना।
८ श्री उदयराज सिंह, अशोक प्रेस, पटना।
९ श्री मुनेश्वर सिंह, अविलाख आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी; चटइयाबासा, पीरपैंती, भागलपुर।
१० श्री सत्यदेव प्रकाश, हरिजी के कोठी, आरा।
११ श्री ऋषभदेव पांडेय, १६० हरिसन रोड, कलकत्ता।
१२ श्री वशिष्टनारायण तिवारी, डि० अ० कंट्रोलर, मिनिस्ट्री आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज, कलकत्ता।
१३ श्री विपिन विहारी वर्मा, दीवान जी के शिकारपुर, चम्पारण।
१४ डा० रघुनाथ शरण, पटना।
१५ श्री मुरली मनोहर जायसवाल, बक्सर।
१६ श्री महावीर प्रसाद, वारिष्टर, महाप्रवक्ता।
१७ डा० गया प्रसाद, पटना।

—॥ भोजपुरी के नियम ॥—

१ 'भोजपुरी' हर हिन्दी महीना के पहिला हफ्ता में निकली।
२ 'भोजपुरी' जनता आ साहित्त के सेवा करी, अउर राजनीति के गुटबंदी से फरके रही।
३ एक सै एक रोपेआ देके केहू 'भोजपुरी' के संरक्षक हो सकेला।
४ संरक्षक लोग पत्रिका के जिन्दगी भर के ग्राहक मानल जइहें।

विग्यापन के दर

	पूरा	आधा	चउथाई	अठवाँ हिस्सा
टाइटिल पेज— चउथा	६०)	३५)	२०)	१२)
दूसरा	५०)	३०)	१८)	१०)
तीसरा	४०)	२५)	१५)	८)
मामूली पेज	३०)	१८)	१०)	६)

मैटर के बीच में—२५ 0/0 जादे।
गवरमेन्ट के विग्यापन—५० 0/0 जादे।

रघुवंशनारायण सिंह, संपादक के जरिये संसार प्रेस, आरा में छाप के बाल-हिन्दी-पुस्तकालय, आरा से प्रकासित।